भारत सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2020-2022

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 7 | अंक 18 | उदयपुर शनिवार 01 अक्टूबर 2022 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

संस्कृतिजनित पैठ लिये अखबार अ-खबर नहीं होते

मानव को सबरंग सबरस संस्कारित करने का नाम संस्कृति है। इसका क्षेत्र अति व्यापक, युगयुगीन और शाश्वत है। यह परम्पराओं की परिपाटी में नये उत्साह का संचरण करती है। इसे पुराने और नये पन में ठीक से विभाजित नहीं किया जा सकता। 'बहता पानी निर्मला' की तरह संस्कृति के संवेग अपनी ताजगी में सम्मोहित किये रहते हैं। जैसे पुराने बीज से नवांकुर फूट पड़ते हैं, कीचड़ से कमल सुशोभित हो उठते हैं, गन्ने की पंगेरी से नया गन्ना आबाद हो उठता है वैसे ही संस्कृति का कोश अपने संस्कारों से काल-दर-काल अपने रूप-स्वरूप को मथता हुआ मण्डी के भावों की तरह उतरता-चढ़ता अर्थगम्य होता रहता है।

संस्कृति का नैरन्तर्य बने रहना, उसका प्रवहमान होते रहना ही उसकी संचेतना है। प्राचीन सभ्यताओं के ध्वंसावशेषों, टीलों तथा टेकरियों में दबी संस्कृति मानव के साहचर्य के बिना मुखर नहीं होकर मौन होती है। वह महत्त्वपूर्ण धरोहर होती है मगर उसकी धारा में प्रवाह नहीं होता। संग्रहालयों की संस्कृति का प्रदर्शन तो होता है मगर उसमें चलायमान जीवनदर्शन का अभाव मिलता है।

ऐसी संस्कृति और उसकी संचेतना के लिए अखबार की भूमिका बड़ी उम्दा, उपयोगी एवं असरदार होती है। अखबार से तात्पर्य जो अपने अंक में अख को बार-बार, बारम्बार समेटे रहता है। अख से तात्पर्य आखर यानी अक्षर से है। रेशम का कीड़ा जैसे रेशम का महि-महि तार उगलता हुआ उसी में रमता-विचरता रहता है, अखबार भी वैसे ही अपने अक्षरों में बार-बार गहरे पानी पैठता हुआ, मनुष्य के लिए संस्कृतिदार होता रहता है। वह कभी क्षरित नहीं होता है यानी उसका कभी क्षरण नहीं होता। वह अ-क्षर बन सदैव खबरों में बना रहता है। खबरें बनाता रहता है। इसलिए अखबार कहलाता है। अखबार खबरें पढ़ाता है। खबरें सुनाता है। जो अ-खबर नहीं होता और खबरों का अम्बार लिये रहता है उसी को अखबार कहते हैं।

संस्कृति का संवाहक आमजन अर्थात लोक समूह होता है। यही उसका उन्नायक, पोषक, प्रेरक एवं प्रसारक होता है। इतिहास, पुरातत्व, धर्म, अध्यात्म, कला, शिल्प, संगीत, नृत्य, अनुरंजन आदि संस्कृति की विविध धाराएं हैं। ये सब संस्कृतिनिष्ठ हैं तो अनुप्राणित हैं। सबके मूल में मनुष्य है। अखबार संस्कृति से मनुष्य को सतत क्रियाशील तथा चेतनावान किये रहता है। यह संस्कृति को समूह, समाज एवं समष्टि से जोड़ता हुआ उस तक पहुंचाने का हलकारा है। धीरे-धीरे सब सेट हो जाता है तब स्वतः स्फूर्त लोक का उमड़ाव हुआ दिखाई देता है।

कब होली आती है, दीवाली आती है, गणगौर, रक्षाबन्धन, आखा तीज आती है, सबको मालूम है। इन दिनों क्या करना है, सब कोई जानता है। होली पर कोई दीपक नहीं जलाता और न दीवाली पर रंग खेलता है। गणगौर सुहाग का त्यौहार है तो दीवाली प्रकाश का। रक्षाबन्धन भाई-बहिन का, भाई द्वारा बहिन की रक्षा का, कर्त्तव्य निभाने का स्मरण सेतु है।

गृहस्थ जीवन सुदशा-दिशा के लिए दस दिन दशादेवी के व्रतानुष्ठान चलते हैं। कार्तिक का पूरा महीना जीवन के शुद्धाचार का है। क्या महिलाएं और क्या पुरुष पूरा माह नहान (स्नान) संस्कृति का पुण्यार्जन कर पावन पवित्र होते हैं। श्राद्धपक्ष में कुमारिकाओं का प्रतिदिन संध्या को घर के बाहर की दीवाल पर गोबर की विविध आकृतियों को रंगबिरंगे फूलों से शृंगारित करने का समभाव संस्कृति के कई उपादानों, उपजीव्यों और उपहारों को चक्रित करता है। अखबार के माध्यम से इन सबका पलेवण एवं पर्यालोचन होता रहता है।

त्यौहार, उत्सवों, मेलोंठेलों का धार्मिक, ऐतिहासिक एवं पौराणिक महत्त्व, उसका वैशिष्ट्य, जन-जन की भागीदारी और खट्टे-मीठे सन्दर्भ अखबार ही प्रस्तुत कराते हैं। संस्कृति का सदाबहार और सूखता स्वरूप भी अखबार के माध्यम से ही चर्चित होता है। अंचल विशेष में हो रही सांस्कृतिक उथल-पुथल और उससे उपजी चुनौतियों के प्रतिफल की जानकारी अखबार द्वारा ही लोगों तक पहुंचती है।

मेवाड़ में किसी समय नारू (रोग विशेष) संस्कृति का बड़ा बोलबाला था। समाचारपत्रों के माध्यम से इस ओर ध्यान आकर्षित किया गया तो इससे छुटकारा पाने के उपाय और उपचार किये गये। उन स्थानों को चयनित किया गया जो इस रोग के मुख्य केन्द्र थे। उन कारणों को खोजा गया। धीरे-धीरे उस रोग का समूल नाश हो गया।

ऐसे ही परिवार नियोजन, पोलियो उन्मूलन के लिए जन जागरण के सुपरिणाम हाथ लगे। संस्कृति केवल नाच, गान और मनोविनोद का नाम नहीं है। मनुष्य को स्वस्थ, सुखी और सदाचारी बनाते हुए सरल जीवन जीने का अनुप्राण संस्कृति है। मेवाड़ में सामूहिक भोज के लिए ढाक-पात के बने पत्तल-दोने पर जीमण जीमने की संस्कृति है जबकि बीकानेर में दुग्द-पान के लिए सकोरा संस्कृति का बहुमान व्याप्त है।

राजस्थान की सांस्कृतिक चेतना को सरजीवन देने में समाचारपत्रों ने बड़ा उल्लेखनीय योग दिया। किसी समय यहां की पड़, कावड़, पगड़ी तथा कठपुतली कला मरणासन्न बनी हुई थी किन्तु भारतीय लोककला मण्डल के संस्थापक देवीलाल सामर के साथ हम लोगों ने अखबारों के माध्यम से इस ओर बार-बार लोगों का ध्यान आकर्षित किया जिससे संस्कृति के सिरमौर कहे जाने वाले इन स्वरूपों की रक्षा हो सकी और इनसे जुड़े कलाकार रोजी-रोटी पा सके।

वे अखबार ही थे जिनके कारण रेगिस्तानी लोकसंगीत को देश के बाहर विश्व के लोगों ने पहचाना और तब भारत में भी इनसे जुड़े कलाकार कद्रदान बने। जैसलमेर-बाड़मेर में शिविर लगाते इधर की मांगणियार तथा लंगा जातियों के लोकसंगीत को लेकर 40 घण्टों का रेकार्डिंग हमारी विशेष उपलब्धि बना।

यही नहीं, पड़कला में श्रीलालजी जोशी, मोलेला में बनने वाली मृणमूर्तियों में मोहनलालजी कुम्हार के साथ ही प्रतापगढ़ की थेवाकला को विश्वस्तरीय पहचान मिली। बसी की काष्ठकला के साथ वहां के मांगीलाल मिस्त्री द्वारा निर्मित कावड़ें देश के अतिरिक्त विदेश के अनेक संग्रहालयों की शोभा बढ़ाने लगी।

मैंने स्वयं ने जनसत्ता, दैनिक हिन्दुस्तान, दैनिक भास्कर, जलते दीप, जय राजस्थान आदि में नियमित कॉलम लिखे। एजेंसियों के माध्यम से भी देश के अनेक अखबारों में नियमित कला-संस्कृतिपरक आलेख लिखे। राजस्थान के अलावा गुजरात, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, तमिलनाडु तथा मणिपुर, त्रिपुरा का भ्रमण करते हुए इस प्रान्त की सांस्कृतिक निधि पर जो लिखा वह 500 से अधिक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुआ। इससे जो वातावरण बना उसी का यह प्रभाव रहा कि वर्तमान में देश के प्रत्येक विश्वविद्यालय में अनेक छात्र लोकसंस्कृति-कला विषय पर शोध कर डाक्टरेट की उपाधि प्राप्त कर रहे हैं। विदेश के भी आये दिन कई छात्र तथा विद्वान यहां आकर भारतीय संस्कृति तथा कला-साहित्य पर शोधानुसंधान कर गर्वित होते हैं।

अल्लाजिलाईबाई को माण्ड गायिका के रूप में और सिद्दीक को खड़ताल वादक के उत्कृष्ट कलाकार की ख्याति मिली। फलस्वरूप वे 'पद्मश्री' से अलंकृत भी किये गये। कोहिनूर और गुलाबो की ख्याति से सबकोई परिचित हैं।

हाड़ौती का चकरी नृत्य अपनी पगडंडी को भी नहीं लांघ पाया था कि अखबार की आंख लगने पर उसने सात समन्दर पार की दुनियां देख ली। ऐसा ही हाल घूमर नृत्य का था। भवाई नृत्य भी किसी समय भवाई जाति के कलाकारों के पास ही ऐसा सिमटा हुआ था कि कलाकारों की जोड़ायत भी उसे नहीं देख सकती थी। धीरे-धीरे इनका सितारा ऐसा बुलन्दगी पर पहुंचा कि आज स्कूलों, कॉलेजों तक में जगह-जगह हर समारोह में इनके प्रदर्शन स्टेटस सिम्बोल बन कर उभरते दिखाई दे रहे हैं।

यह सही है कि देश की आजादी के बाद हमारे देश की लोकधर्मी-कला-संस्कृति का स्वरूप बदरंग होता चला गया कारण कि पहले इनका दायरा यद्यपि सीमित था किन्तु विशिष्ट क्षेत्र अंचल और यजमान के साथ बंधा हुआ था, जब वह माहौल और परिस्थिति नहीं रही तब इनका कोई धौरधणी नहीं रहा। कलाकार स्वयं भी बंधीबंधाई आस्था, विश्वास और डोर से जुड़ा होने तथा वांछित परिवर्तन और प्रयोग नहीं कर पाने के कारण अपने ही हाथों से अपनी समृद्ध परिपाटी को सुरक्षित नहीं रख सके।

ऐसे में कुछ कला-रसिकों और लोकधर्मी चिन्तकों ने इनके उठान का बीड़ा अपने हाथ में लिया। सबसे पहले तो मैंने ही सन् 1964 में भीलों में प्रचलित गवरी को ही अपनी शोध का विषय बनाया। आज तो गवरी को लेकर आधुनिक नाट्यकार भी प्रयोगधर्मी बने हुए हैं। ऐसे ही राजस्थान की लोकधर्मी नाट्य परम्परा को लेकर खूब लिखा गया। आज इसी मेवाड़ अंचल का लोकदेवी-देवताओं की माटी की मूर्तियों के लिए मोलेला, काष्ठकला के लिए बस्सी, कपड़ों पर छपाई के लिए आकोला की जो कला विश्वप्रसिद्ध बनी हुई है वह हमारे जैसे इस क्षेत्र में लगातार काम करने वालों का लेखन और समाचारपत्रों द्वारा छापन का ही प्रतिफल है अन्यथा इनमें निहित संस्कृति के विराट चैतन्य स्वरूपों से हम कभी के हाथ मले होते।

पर्यावरण को बचाने से लेकर जीवनमूल्यों की रक्षा करने के प्रयोजन में समाचारपत्रों की बहुउपयोगी भूमिका और सरकार के प्रयत्नों को रेखांकित करने के बावजूद अभी भी इस ओर बहुत कुछ करने की आवश्यकता है। कभी अपने हुनर में महत्त्वपूर्ण बने शिल्पकारों के हाथों में अब वह शिल्प-निर्माण कार्य नहीं रहा। बहुत सारे नृत्य-नाट्यानुरंजन से जुड़े उत्सव समाप्त हो गये। प्रदर्शनकारी कलाओं को जीवन में आत्मसात करने वाली जातियों ने अपनी पारम्परिक कलाकारिता को सदैव के लिए तिलांजलि दे दी तो कई अन्य बिचौलिये भी असली कलाकार बन व्यवसाय करने लग गये। ऐसी स्थिति में समाचारपत्रों का दायित्व और अधिक मुखरित होना मांगता है।

यों पहलीबार 08 अक्टूबर 1967 को अखिल भारतीय लोककला संगोष्ठी के आयोजन में ही देश के जानेमाने लोककलाविदों और संस्कृतिधर्मियों ने यह विचार प्रारम्भ कर दिया था कि बदलते सन्दर्भों में कैसे और किस रूप में हम अपनी कला-संस्कृति को रक्षित एवं सुरक्षित कर पाते हैं और तब ही आक्रोश खाये एक कलाकार ने अपना दुखड़ा सुनाते हुए यह दोहा कहा था-

कलाकार खेती करो, हल सूं राखो हेत।
कला वला ने गाड़ दो, ऊपर डालो रेत।।

इस दोहे का यह प्रभाव तो रहा ही कि मुझ जैसे व्यक्ति ने इसी क्षेत्र में काम करने का मानस कट्ठा कर लिया जिसका निर्वाह आज भी जारी है।

- म. भा.

जैसे पुराने बीज से नवांकुर फूट पड़ते हैं, कीचड़ से कमल सुशोभित हो उठते हैं, गन्ने की पंगेरी से नया गन्ना आबाद हो उठता है वैसे ही संस्कृति का कोश अपने संस्कारों से काल-दर-काल अपने रूप-स्वरूप को मथता हुआ मण्डी के भावों की तरह उतरता-चढ़ता अर्थगम्य होता रहता है। अखबार से तात्पर्य जो अपने अंक में अख को बार-बार, बारम्बार समेटे रहता है। अख से तात्पर्य आखर यानी अक्षर से है। रेशम का कीड़ा जैसे रेशम का महि-महि तार उगलता हुआ उसी में रमता-विचरता रहता है, अखबार भी वैसे ही अपने अक्षरों में बार-बार गहरे पानी पैठता हुआ, मनुष्य के लिए संस्कृतिदार होता रहता है। अखबार खबरें पढ़ाता है। खबरें सुनाता है। जो अ-खबर नहीं होता और खबरों का अम्बार लिये रहता है उसी को अखबार कहते हैं।

स्वास्थ्य शिक्षा और सम्मान के पर्याय कांकरिया सरदारमलजी

कलकत्ता निवासी सरदारमलजी कांकरिया मूलत: प्रवासी राजस्थानी हैं। जब भी मेरी उनसे भेंट हुई वे मेरे अग्रज डॉ. नरेन्द्र भानावत, भाभी डॉ. शान्ता भानावत और माता डेलूबाई को अवश्य याद करते रहे। मेरा परिचय भी कांकरियाजी से उन्हीं के माध्यम से हुआ।

29 सितंबर 2022 को जब डॉ. सुरेश सिसोदिया ने सबै-ही-सुबै मुझे फोन किया कि कलकत्तावाले कांकरिया साहब मुझसे मिलना चाहते हैं तो मुझे अपार खुशी हुई कि आज हमारे यहां, बकौल मेरी माताजी के 'सोना रो सूरज उगियो/' माताजी जब भी कोई खुशी का मौका आता, धर्मस्थानों में गाये जाने वाले तवन, भजन, लोकगीत की यह पंक्ति दोहराती।

सो मैंने सिसोदियाजी से कहा कि इस समाचार के लिए आपके मुंह में घी-शक्कर पर मैं उन्हें कष्ट देने की बजाय जहां आप कहें, मिलने आ जाऊंगा। इस पर वे बोले, सो तो ठीक है मगर वे आपके घर आकर स्वयं मिलना चाहेंगे।

मैंने कभी अकस्मात ऐसी होने वाली अपार खुशी पर, 'घर नाचे, थांबा हंसे, खेलण लागी खाट' पंक्ति लिखी थी सो तुक्तक और बहू रंजना को यह खुशी जाहिर कर दी। कोई दस बजे कांकरियाजी को लेकर सिसोदियाजी आये।

तीन तो हम और दो वे; पांचों के बीच घंटे-डेढ़ घंटे तक अनेक इतरउतर की अनौपचारिक बातें होती रहीं कि पता ही नहीं चला। हां, बीच-बीच में सिसोदियाजी ने संकेत दिया था कि यहां से डॉ. हंसा हिंगड़ और फिर डॉ. प्रेमसुमन जैन के वहां मिलने जाना है। हमारी बातचीत के कुछ खास बिन्दु ये रहे-

महेन्द्र : आपसे भेंट करते ही 16 सितंबर 2018 का समय याद आ रहा है जब मैं और तुक्तक कलकत्ता आये और आपने विचार मंच की ओर से मुझे कन्हैयालाल सेठिया पुरस्कार प्रदान किया था। राज्यपाल केसरीनाथजी त्रिपाठी से मैं पूर्व परिचित था। वे सधे राजनीतिज्ञ के साथ उतने ही सधे कवि हैं। मुझे उन्होंने एक कविता पुस्तक भी भेजी थी।

कांकरियाजी : हमने और भी मौकों पर उन्हें बुलाया। ऐसे विद्वान राजनेता बिरले होते हैं। हमने तो उनका सम्मान भी किया।

तुक्तक : वहां मैंने देखा, सभी समाज के, क्षेत्र के लोगों की उपस्थिति में हुआ कार्यक्रम बड़ा भव्य रहा।

कांकरियाजी : सभी की मेरे प्रति अच्छी धारणा है सो ही इतना काम हो पाता है अन्यथा तो टांग खिंचाई में बहुत सारे उत्तम काम नहीं हो पाते हैं।

सिसोदिया : आप सर्व समाज में वरेण्य हैं। इस उम्र (94) में भी ये इतने सक्रिय हैं। सभी को ताज्जुब होता है।

महेन्द्र : चींटी सबसे छोटी; अथक परिश्रमी रह बिना कोई अपेक्षा, उपेक्षा के चुपचाप अपना सुकर्म करती रहती है।

कांकरियाजी : सभी का सहयोग और एक मन, एक मत रहता है तो ही कुछ कर पाता हूं।

तुक्तक : लगा, आपके पास आगे-से-आगे कुछ नया अच्छा करने का सोच-विचार चलता ही रहता है और आप उसे कार्य रूप में परिणत करने की शुरूआत भी किये रहते हैं।

कांकरियाजी : तभी तो कुछ हो पाता है भाई।

महेन्द्र : सबसे आवश्यक तो मेरी निगाह में स्वास्थ्य फिर शिक्षा और फिर सम्मान का क्षेत्र है आप तो इन तीनों के पर्याय के रूप में जाने जाते हैं पर धर्म और समाज के क्षेत्र में भी आपकी पहुंच अतुलनीय है।

सिसोदिया : सही कहा, कांकरिया साहब किसी धर्म सम्प्रदाय अथवा वर्ग विशेष के संकुचित दायरे में आबद्ध नहीं हैं।

रंजना : पापाजी बता रहे थे कि कलकत्ते में आपने जो इनका सम्मान किया वह बड़ा अद्‌भुत रहा। दूसरे मिलने आने वालों के सामने भी प्रसंग छिड़ने पर ये उसकी चर्चा किये बिना नहीं रहते।

कांकरियाजी : ये विद्वान हैं। इनकी कही बात का असर स्थायी होता है। इन्हें सम्मानित कर विचार मंच गौरवान्वित हुआ।

रंजना : ऐसे और भी सम्मान.....

कांकरियाजी : कुल 21 सम्मान देते हैं। रवीन्द्र जैन के नाम से संगीत के क्षेत्र में उपलब्धि प्राप्तों को। रवीन्द्र जैन हमारे स्कूल में टीचर थे। तब 125 रूपये माहवार देते थे। एकबार उन्होंने कहा, 25 रूपये पगार बढ़ाओ। मैं बोला, भाई बजट नहीं है। वो टाइम और था। समै-समै की बात है। विजयसिंह नाहर सम्मान देते हैं। स्वर सरिता वाले केसी मालू का भी सम्मान किया था। आप भी नाम भेजते रहें। महेन्द्रजी को बड़ी नोलेज है।

तुक्तक : अभी कितने स्कूल रन कर रहे हैं?

कांकरियाजी : चार स्कूल चल रहे हैं। सारी सुविधाएं हैं। सबकुछ साधन उपलब्ध कराने के बावजूद नाम मात्र की फीस 20-30 हजार लेते हैं। 8-10 फीसदी बच्चों से कोई फीस नहीं ली जाती। कुछ हाफ-फ्री हैं। सभी बच्चे पढ़ते हैं। अब पांचवां बड़ा हाई क्वालिटी का अत्याधुनिक सुविधाओं वाला स्कूल खोल रहे हैं। पैसे वाले बच्चों के लिए होगा। यह भी जरूरी था। लड़के-लड़कियों के हॉस्टल भी हैं।

महेन्द्र : बहुत पहले मैं भूपराजजी के साथ आपके स्कूल आया था। मैं भारतीय भाषा परिषद में भाषण देने तब डॉ. प्रभाकर माचवे वहां निदेशक थे।

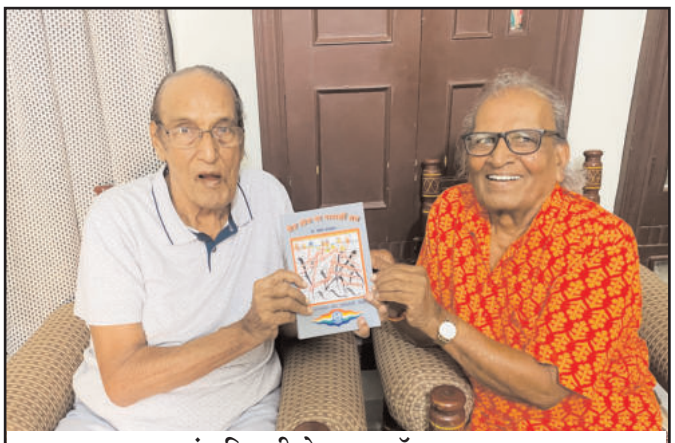

कांकरियाजी के साथ डॉ. भानावत

कांकरियाजी : वे मेरे सबकुछ थे। सारा काम समझे हुए थे। अच्छी जानकारी लिये थे। उनकी कमी अखरती है। उन जैसा अब मुश्किल है।

तुक्तक : आपने हॉस्पिटल के बाबत भी कुछ कहा था।

कांकरियाजी : हां, हावड़ा में 160 बेड का मोस्ट मोडर्न कैंसर हॉस्पिटल 2024 में चालू हो जायेगा। यह टाटा अम्बानी और अमेरिका के हॉस्पिटल के साथ सहयोग लिये रहेगा। हम 15 करोड़ की बिल्डिंग बनाकर देंगे बाकी सारी मशीनरी टाटा अम्बानी के सहयोग से करीब 25 करोड़ की होगी। जटिल कैंसर का इलाज अमेरिका में होगा। इसे मैं एक बड़ी अच्छी उपलब्धि मानता हूं।

रंजना : आपने सादी चाय के लिए कहा सो बड़े संकोच में लाई हूं। नमकीन भी कोई खास नहीं है।

कांकरियाजी : अरे! नमकीन की कोई जुर्रत नहीं है।

रंजना : आप भोजन भी यहीं कर लीजिये। अभी फटाफट बन जायेगा।

कांकरियाजी : भोजन तो मैं अपने भतीजे के वहां करूंगा। उसने चौका चला रखा है।

महेन्द्रजी, हमारा एक नर्सिंग कॉलेज भी चलता है। 6-7 लड़कों को सहयोग करते हैं। एक मुस्लिम लड़के को भी सहयोग किया। सब काम शान्ति से चलता है। कोई तर्क-वितर्क नहीं करता। इतनी प्रवृत्तियां कोई नहीं चलाता। छात्रवृत्ति देते हैं। लोन भी देते हैं। अब तक 5-7 करोड़ का लोन दे चुके। एक-डेढ़ करोड़ वसूल नहीं हुआ तो कोई बात नहीं। बच्चे पढ़कर अपने काम में लग गये। यह संतोष है।

रंजना : अभी तो आचार्यश्री का व्याख्यान चल रहा होगा। सुनती रहती हूं, प्रतिदिन भीड़-की-भीड़ उमड़ती है। दर्शन होते नहीं। व्याख्यान सुनाई देता नहीं।

कांकरियाजी : मैं उनके दर्शनार्थ सीढ़ी चढ़ा तो मुझे कहा गया कि अभी दर्शन नहीं होंगे। मैंने कहा, बड़ी मुश्किल से चढ़ा हूं। अब कह रहे हो कि दर्शन.... इतने में राजेश मुनि आये सो मुझे दर्शन कराये।

मैं तीन साल बाद आया। आप सब जगह जाते हैं। मुझे भी प्रतिबन्ध स्वीकार्य नहीं। मारवाड़ में कहावत है, रंजना बोली, नाम बड़े दर्शन छोटे कहावत इधर भी है।

महेन्द्र भाई, मुझे नानालालजी म. सा. ने कभी नहीं कहा, इधर आओ, उधर मत जाओ।

महेन्द्र : आप अध्ययनजीवी होंगे ही। मुझे भी लोग धार्मिक कम कहते हैं। एक पुस्तक 'जैन लोक का पारदर्शी मन' दी। बहुत खुश हुए। लगे हाथ लोकदेवता वीर कल्लाजी राठौड़ और राजस्थान की लोककथाएं पुस्तक भी भेंट की।

लोग धर्म को जोड़ने की, एक होने की बात करते हैं। विश्व मानव का उपदेश देते हैं पर आप-हमारे देखते-देखते धर्म जुड़ रहा है कि बंट रहा है, छंट रहा है। एक ही सम्प्रदाय से निकले भगवनों ने अपने-अपने सम्प्रदाय-संघ-संगठन कायम किये। बच्चे सवाल करते हैं पर मुझसे कोई जबाव नहीं मिलता।

सुरेशजी ने इशारा करते घड़ी दिखाई। कांकरिया साहब भी उठ खड़े हुए। बोले, अबकी बार आऊंगा तो पांच-सात घंटे लेकर आपके साथ बैठूंगा।

पोथीखाना

'राजसमंद की झांकी' के बहाने परिजनों का स्मरण

'झांकी राजसमंद की' पुस्तक के रचनाकार लक्ष्मणसिंह कर्णावट का पूरा परिवार जैन तेरापंथ धर्मसंघ का श्रद्धानिष्ठ सौभाग्यशाली प्रतिष्ठित परिवार रहा है।

समय-समय पर संघाचार्यों द्वारा कर्णावटजी के पिता भंवरलालजी को शासनसेवी, दृढ़संकल्पी, काका स्वतंत्रता सेनानी देवेन्द्रजी को समाजभूषण, अणुव्रत महारथी, पत्नी पुष्पाजी को श्रद्धा की प्रतिमूर्ति, पुत्र कृष्णकान्त को कल्याण मित्र तथा स्वयं लक्ष्मणजी को शासनसेवी, श्रद्धानिष्ठ श्रावक जैसे उपाधि-अलंकरण समाज एवं धर्मसंघ के प्रति उनके समर्पित योगदान के शिलालेख हैं।

राजसमंद उदयपुर संभाग का जिला तो है ही पर जिला मुख्यालय का नाम भी है। यहां की राजसमंद झील के किनारे बनी नौ चौकी पाल अपने स्थापत्य की बेजोड़ कलाकृति है। इसी पाल पर महाराणा राजसिंह से सम्बन्धित संस्कृत में लिखे राजप्रशस्ति महाकाव्य को उत्कीर्ण करते 25 शिलाएं विश्व के सबसे बड़े शिलालेख के रूप में दर्शित हैं। विश्वप्रसिद्ध हल्दीघाटी रणक्षेत्र तथा कुम्भलगढ़ जैसा अजय दुर्ग भी इसी जिले की अप्रतिम धरोहर हैं।

पाल पर जो मन्दिर है वह अम्बामाता घेवरमाता का नहीं होकर अम्बामाता का है। घेवरमाता दयालशाह की पत्नी नहीं थी। पाल की दीवाल के बार-बार गिरने पर महाराणा का घेवरमाता के बलिदान का आदेश तथ्य से परे असम्भव लगता है। सन् 1966 में महाकाव्योत्कीर्ण शिलाओं के इम्प्रेशन लेने मैं तथा संस्कृत विद्वान कृष्णचन्द्र शास्त्री साहित्य संस्थान, राजस्थान विद्यापीठ की ओर से वहां दो दिन रहे।

घेवर माता के सम्बन्ध में बड़े बुजुर्गों ने बताया कि ज्योतिषी के कहे अनुसार महाराणा राजसिंह ने ऐसी पतिव्रता महिला को खोज लाने के लिए कहा जिसके बायें गाल पर आंख के नीचे तिल हो। वह महिला मालवे की घेवरबाई थी। होम के दौरान उसके हाथ से पत्थर रखवाया गया। इस दरम्यान घेवरबाई को सत चढ़ा और वह होम करते बिना पति के सती हो गई। फिर दीवाल कभी नहीं टूटी, तड़की। पाल के वहीं एक ओर घेवरमाता की छोटी-सी मन्दरी बनी हुई है जिसे बहुत कम लोग जानते हैं।

पुस्तक में लेखक ने अपनी जन्मभूमि एवं परिजनों के प्रति मार्मिक जो काव्य-संवेदनाएं व्यक्त की हैं वे सबकी ही संवेदना बन गई हैं। पिता, काका और पुत्र के प्रति दर्दभरी दास्तानों की अभिव्यक्ति तो अश्रुविगलित दस्तावेज ही है।

पुस्तक के अन्त में मां पुष्पा की पुत्र कृष्णकान्त के प्रति ममताजनित व्याकुल हृदय का आर्तनाद बड़ा ही मर्मस्पर्शी है-

तुम मम्मी-मम्मी करते चले गये
मैं बेटा-बेटा करती तरसती रह गई
हे गंगा मैया! जहां पे डाली है बेटे की अस्थियां वहां से जीवित निकाल दे, मेरा कृष्ण कन्हैया तेरे चरणों की दासी हूं मैया। इतना उपकार कर दे मेरी मैया! (पृ. 149)

सच तो यह है कि यह एक मां की आकुल अन्तर का अवलोकन देती अभिव्यक्ति है। आहत मन का आर्तनाद है। करुणाजनित रूदन का रेरका है। टूटे हुए दिल के दर्द का मंगल है।

ऐसे में काश! लता की बेहाल मनस्थिति की भी कोई नि:शब्द आहट सुनाई देती। यथा -

प्राण नहीं, नहीं दूध है, आंखों का सूखा पानी।
जिनवाणी भी मौन होगई, ठहर गई है जिनगाणी।।

लेखक का पता 60-डी, पंचवटी, उदयपुर और मो. नं. 94142-39333 हैं। - **म. भा.**

स्मृतियों के शिखर (150) : डॉ. महेन्द्र भानावत

कुंवारों के देश में सभी गरासिये विवाहित

राजस्थान में आदिवासियों की इन-मीन साढ़ा तीन जातियां हैं। इनमें भील-मीणा सर्वाधिक चर्चित हैं। गरासिया सर्वाधिक रंगीन और शहरिया उपेक्षित ही हैं। राजस्थान के आदिवासी गरासियों का देश 'कुंवारों का देश' कहलाता है। आबू पर्वत के पूर्व में फैली पहाड़ियों में 24 गांव फैले हुए हैं। इन गांवों का यह क्षेत्र 'भाखर पट्टा' कहलाता है। इस पट्टे का सबसे बड़ा गांव जाम्बुड़ी है। इसी गांव में गरासियों का सबसे बड़ा आदमी 'पटेल' रहता है। यह पटेल ही उनका राजा है। उसी का हुकम चलता है। फरमान चलता है। न्याय चलता है। सजा चलती है। सजा में पांवों में खोड़ाबेड़ी डालना, जेल देना तक शामिल है। कोठरियों के अवशेष तो आज भी देखे जा सकते हैं। पटेल परम्परागत पीढ़ी-दर-पीढ़ी बनता आ रहा है। वर्तमान पटेल लालजी हैं।

गरासियों के घर आबू रोड़, पिंडवाड़ा, बाली, कोटड़ा तथा गोगूंदा तहसील की पहाड़ियों में फैले हैं। इन पहाड़ियों का विस्तार गुजरात के बनासकांठा व साबरकांठा जिले तक है। उधर भी गरासियों की बस्ती है। आबू में गरासियों की उत्पत्ति हुई। इसके कई कथा-किस्से हैं। बीच में युद्ध की स्थिति ऐसी आई कि उन्हें अपना देश छोड़कर जाना पड़ा तब उन्होंने आन ली कि जब तक आबू वापस नहीं लेंगे, एक ही कान में मुरकी पहनेंगे। इस आन को उन्होंने पूरा निभाया। आबू वापस लिया तब ही दूसरे कान में मुरकी पहनी। पुन: अपने घर आने पर ये लोग 'घर आया- गराया' कहे गये। गराया शब्द गरासिया की जगह आज भी प्रचलित है जिसके मूल में यही भाव-तथ्य लक्षित है।

सन् 1988-89 में गरासियों के अध्ययन के लिए मुख्यत: उनके निवास क्षेत्र आबू पर्वत के पूर्व में फैली पहाड़ियों में बसे चौबीस गांवों में से कुछ गांवों और उस क्षेत्र-पट्टे के सबसे बड़े गांव जाम्बुड़ी की यात्रा की गई।

वहां उनकी जीवनशैली का अध्ययन-सर्वेक्षण किया गया। यही नहीं, इसके अलावा कभी उदयपुर के लोकानुरंजन मेले में तो कभी भीलवाड़ा के गैर समारोह में; कभी जयपुर के सांस्कृतिक समारोह में; कभी आबू की साहित्यकार संगोष्ठी में तो कभी सिरोही के आंचलिक समारोह में; कभी कोटा के कलाकार समारोह में तो कभी बेणेश्वर, सियावा, घोटिया आम्बा के मेले में; जहां-जहां भी गरासियों से मिलना हुआ, सदा ही कोई न कोई जानकारी हाथ लगती रही।

इस दौरान पाया गया कि उनका जीवन अजीब। उनकी मस्ती अजीब। उनके मेलेठेले अजीब। उनका घर-संसार अजीब। उनका प्रेमाचार अजीब। उनके रस्मरिवाज अजीब। सब कुछ अजीब निराला अनूठा है। हर मेले में गरासिया युवक-युवती अजीब ढंग से बनेठने खटकेदार सिणगार किये मिलेंगे। अपने को अलबेले छैले किये मिलेंगे।

युवती अपने सभी आभूषणों और सिणगारों में सजती-धजती-बजती-छनछनाती मिलेगी तो युवक अपने अल्हड़ ओज में चका-छका मदभरा बांका दिखाई देगा। युवतियां अपनी हेली-सहेली की बांह में बांह डाले डोलती-तोलती अपने को खोलती नखरे बांटती-बिखेरती मिलेगी तो युवक अपने यार-दोस्त के कंधे पर हाथ धरे अपनी लाठी के सहारे नाना उम्मीदों में खोये रंगारंग होते लगेंगे।

होली के बाद से गरासियों के मेलों की बाढ़ आ जाती है। त्रयोदशी को अम्बाजी के पास कोटेश्वर का मेला और अमावस्या को

देलवाड़ा के पास कोटड़ा-कोसीना रोड़ पर चेतर विचितर मेला। इन मेलों का पौराणिक संदर्भ है। उनके कथा-किस्से कई तथ्य उजागर करते हैं। बैसाख कृष्णा पंचमी को सियावा गांव का गणगौर मेला उनका सबसे बड़ा मेला है। लगभग तीन सौ वर्षों से यह मेला लगता आ रहा है।

सुरपगला गांव के सरपंच भूराराम गरासिया ने बताया कि सियावा गांव में तीन फली है- माता का खेड़ा, जलैया फली और सियावा गांव फली। इन तीनों फली में बांसिया, डूंगाइचा तथा सिरीमिया बांसिया गोत्र के गरासिया रहते हैं। इनमें से प्रतिवर्ष एक-एक गोत्र के गणगौर लेते

हैं। चैत्र शुक्ला एकम को पांच युवक और पांच युवतियां गणगौर का व्रत लेती हैं। बीस दिन तक गौरमाता का अखण्ड दीपक जलता रहता है और वे युवक-युवतियां प्रतिदिन अपने सिर पर गणगौर को लेकर नाचते-गाते रहते हैं। गौर के साथ ईसर भी होते हैं। बीस दिन तक गणगौर-ईसर छोटे रहते हैं। केवल लोठे में नीम-फल सहित डालियां या अन्य फूल लगा दिये जाते हैं।

अंतिम दिन ये साक्षात् स्वरूप धारण करते हैं, तब बांस की खपचियों के सहारे इन्हें आदम रूप दिया जाता है। दोनों के मुंह (मुंह-मुखौटे) काठ के बने होते हैं जो मुंह पर लगा दिये जाते हैं। फूल-पत्ती, खजूर के कच्चे फल-खजूरे, आम के पत्ते, महुवा फल आदि की मालाएं बनाकर गौर-ईसर को सजाते हैं और संध्या को विशेष जुलूस-उत्सव के साथ नाचते-गाते मेले में पहुंचते हैं। यहां गणगौर-ईसर का विवाह रचाया जाता है।

इस मेले में प्रत्येक गरासिया-गरासियन भाग लेना अपना पवित्र कर्त्तव्य समझते हैं। इनके झुंड के झुंड रात-रात भर गाते-नाचते चले आते हैं। तब मेले में प्रत्येक हंग को आटा दिया जाता जिससे ये रोटले बनाकर खाते। अब यह प्रथा नहीं रही। अकाल की मार ने उनके साथ जबर्दस्त चोट की। अब उतनी फसल भी नहीं होती है। भूराराम ने बताया कि तब एक किलो अनाज बोते तो एक कलसी पैदावार होती थी। एक कलसी का अर्थ दो क्विंटल के बराबर था। आज स्थिति ठीक उलटी है। अब एक कलसी बोते हैं तब जाकर एक किलो अनाज पैदा होता है।

मोर को ये आदर्श पक्षी मानते हैं। मोर के कई गीत हैं। एक गीत में मोर से सवाल-जवाब है। उससे पूछा जाता है- तुम्हारे मामा कौन? वह कहता है- बारह मेघ मेरे मामा हैं और तेरह बिजली मेरी मामियां हैं।

मोर जैसे पंखों वाला कोई दूसरा पंखेरु नहीं है। इसके पंख लम्बे तथा बड़े ही मुलायम अनेक रंगों की झांई लिये होते हैं। इनमें मयूरनी जिसे ढेलड़ी भी कहते हैं, के पंख बहुत छोटे होते हैं जो खूबसूरत भी नहीं होते। इसे जब खाने को कुछ नहीं मिलता तब ये कंकड़ चुगकर अपना निर्वाह कर लेते हैं। अकाल के दिनों में ये कंकड़ खाकर जिन्दा रह सकते हैं। कहा जाता है कि मोर के पांव सुन्दर नहीं होते। नृत्य कर जब वह अपने पांवों की ओर निहारता है तब उनके कुरूप होने पर आंसू बहाता है। पास खड़ी मयूरनी जब वे आंसू पी लेती है तो उसके मयूर पैदा होता है पर जब वही आंसू मोरनी धरती से ग्रहण करती है तब मोरनी पैदा होती है। मोर भोग नहीं करता इसीलिए सबसे सुन्दर पक्षी के रूप में धरती का जीव बना हुआ है। कृष्ण ने भी अपने मुकुट को इसीलिए मोरपंख से शोभित किया जिससे उनका मुकुट ही 'मोर मुकुट' नाम से जाना गया। इस सम्बन्ध में जो लोककथा सुनने को मिलती है, वह इस प्रकार है

एकबार मोर ने गेंद उछाली। उस उछलन से बारह बरस का अकाल पड़ा। खाने को तो क्या देखने तक को अन्न का एक दाना तक नहीं रहा।

बादलों ने समझा कि मोर भी मारे अकाल के मर गया होगा। कुछ दिनों बाद मोर मिला तो बादलों को बड़ा अचरज हुआ। उन्होंने मोर से पूछा कि वह क्या खाकर जिया?

मोर बोला, नाज नहीं था तो क्या हुआ, कंकड़ तो थे। मैं उन्हीं को खाकर जीवित रहा। इन कंकड़ों के लिए मुझे बहुत भटकना पड़ा। उनकी तलाश करते-करते मेरे पांव कैसे बेडोल हो गये हैं। नाच तक बिगड़ गया तभी मैं नाचते-नाचते जब अपने पांव निहारता हूँ तो उन्हें देख जार-जार आंसू बहाता हूँ।

ऐसी ही एक मजेदार लोककथा मेवाड़ के बालकों में बड़े मनोरंजक रूप में सुनने को मिलती है। उसके अनुसार कुम्हार ने मिट्टी के बर्तन तालाब की पाल पर औंधे धर दिये। उधर आती-जाती गायों ने उन्हें फोड़ना शुरू किया। पूछने पर गायें बोलीं, ग्वाला चराने नहीं ले जाता है। कुम्हार ग्वाले से बोला तो ग्वाला बोला, गाय मालिक हमें चराई की रोटी नहीं देता है। कुम्हार रखवाले के पास गया तो जवाब मिला, घट्टी ने आटा पिसाना बन्द कर दिया।

इस पर कुम्हार घट्टी के पास पहुंचा। उसने जवाब दिया, मेरे ऊपर मेहमान बैठे हैं। मेहमान से पूछा तो बोला, बरसात के कारण घर सब ओर से चू रहा है। घट्टी सुरक्षित है। मेह लगातार बरस रहा है। यह सुन कुम्हार मेह के पास गया। मेह बोला, लगातार मोर बोल रहे हैं और जोर-जोर से 'मेहाओ' अर्थात् मेह आओ का आव्हान कर रहे हैं। कुम्हार मोर के पास गया तो मोर अपनी मरोड़, अकड़ से गर्दन ऊंची कर बोला, मैं बोलूंगा क्यों नहीं, मेरे दादाजी का जो देश है।

विवाह-शादियों में गरासियों को बहुत खर्च करना पड़ता है। इतना खर्च ये कर नहीं सकते। इसलिए इनमें विवाह बहुत कम होते हैं पर परिवार सभी बसा लेते हैं। लड़का जब जवान हो जाता है तब वह अपनी हमउम्र लड़की की तलाश में रहता है। इस तलाश में लड़की भी रहती है। दोनों के परिवार भी इसमें पूरा सहयोग करते हैं।

लड़की-लड़का अपनी ही जाति-बिरादरी का होता है। दोनों को कोई प्रसंग ढूंढकर मिला देते हैं। यों इनमें विवाह-पूर्व लड़की को किसी से मिलने की पूरी आजादी है। मिलने पर युवक-युवती एक-दूसरे को भेंट देते हैं। यह भेंट कांच, कांगसी, बिंदी, रूमाल जैसी रोजमर्रा की जरूरत की चीज होती है। जब दोनों का प्रेम पक्का हो जाता है तब वे किसी मेले में मिलने का तय कर वहां से भागने को मचल पड़ते हैं। सियावा के मेले में ऐसे युगल प्रेमी सर्वाधिक भागते केवल सुने ही नहीं गये बल्कि आंखों के सामने यह नजारा भी देखने को मिला।

लड़की को उड़ाकर युवा गरासिया कहीं छिपता नहीं है। वह सीधा अपने पितृगृह पहुंचता है। माता-पिता सब समझ जाते हैं। इधर लड़की का पिता ढूंढ़ता, पता लगाता वहां आता है। गांव के पंचों को इकट्ठा करता है। पंचायत बैठती है। जब दोनों रजामंद हैं तो पंच भी अपनी सही लगा देते हैं परन्तु हर्जाने के रूप में लड़के के पिता को एक निश्चित रकम लड़की के पिता को देनी होती है, जो वे तय करते हैं।

अमूमन यह रकम चार हजार रूपया होती है। ऐसे अस्सी प्रतिशत गरासिये मिलेंगे जो इसी रूप में अपने जीवन साथी का वरण करते हैं। विवाह की रस्म कहीं होती भी है तो बहुत बाद में जब उनके संतानें हो जाती हैं। ऐसे मौके भी आते हैं जब पिता-पुत्र एक साथ शादी रचाते हैं। इसलिए इनमें कहा जाता है कि ये कुंवारे होते हुए भी विवाहित होते हैं।

बिना विवाह अपनी प्रेमिकाओं के साथ वर्षों रहते उनके बालबच्चे होना स्वाभाविक है पर समाज में यह प्रथा सर्वमान्य है। विधिवत विवाह नहीं होने का सबसे बड़ा कारण गरीबी है। जब स्थिति ठीक हो जाती है तब विवाह की रस्म निभाई जाती है। ऐसी स्थिति में उनके बालबच्चे भी उस विवाह में सम्मिलित हो बड़े उमंग और उत्साह से भाग लेते हैं। ऐसी प्रथा राजस्थान में ही नहीं, अन्य प्रांतों के आदिवासियों में भी मिलती है। यथा-

- शेष पृष्ठ सात पर

शब्द रंजन

उदयपुर, शनिवार 01 अक्टूबर 2022

सम्पादकीय

राजधर्म भूलती राजनीति

प्रत्येक काल में शासन सुसंचालन के लिए राजा सदैव अपनी प्रजा के हितचिंतन का ख्याल रखता था। शासन की समस्त देखरेख राजा के जिम्मे थी। इसीलिए गोस्वामी तुलसीदास ने लिखा- 'जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी, वो नृप अवस नरक अधिकारी।' लेकिन राजा स्वेच्छाचारी नहीं था। अप्रत्यक्ष रूप में प्रत्यक्षत: ऋषि, मुनियों का उस पर अंकुश बना रहता था। ऐसा समय भी आया जब दुष्ट राजा से जनता त्रस्त हो गई। राजा निरकुंश हो गया तब साधु-संतों की बैठकी में ऐसे राजा के खिलाफ मंत्रणा होकर उसे सत्ताच्युत कर दिया गया।

मेवाड़ के राजधर्म में तो यह हिदायत अंकित की गई थी- 'जो दृढ़ राखे धर्म को तिहि राखे करतार' सो राजधर्म का अखंड पालन होता रहा। महाराणा प्रताप पर जब संकट आया तो उन्होंने भगवान एकलिंगनाथ के श्रीचरणों में अपना राजपाट ही समर्पित कर स्वयं ने उनकी दीवानी धारण कर ली थी। तब से वही परम्परा अब तक चल रही है।

वह राजधर्म अब कलिकाल में दिखाई नहीं देता। अब राजा-महाराजाओं का शासन नहीं रहा और राजधर्म का पटाक्षेप होने पर उसकी बजाय लोकतंत्र आ गया। राजतंत्र और लोकतंत्र दोनों में भेद रहा तो यही कि तंत्र तो रहा पर राज गायब हो गया। तंत्र की जड़ें और गहरी होती जा रही हैं। अब राजधर्म की जगह राजनीति शब्द प्रभावी हो गया है।

इसमें भी बड़ी चतुराई भरी चालाकी किंवा चालाकी भरी चतुराई को प्रभावी बना दिया। इसमें शासनचेता प्रतिनिधियों ने राज अर्थात सत्ता पर कुंडली मारते जनसेवा का बिल्ला लटकाये मक्खी की तरह सत्ता सुख पर अपने पंख-पांव फैलाने शुरू कर दिये।

ऐसी राजनीति करने वाले राजनेताओं के नीति की इति करने में भी कोई शर्म-संकोच नहीं रखा। जो कुछ अच्छाई अर्जित की उसका भी राज-भूख के मद में अपनी बनीबनाई साख को राख में मिला दिया।

ऐसे में याद आते हैं राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जिनकी राजहीन, सत्ताहीन, तंत्रहीन लालसा ने सर्वथा शुद्ध एवं सात्विक ढंग से अहिंसक तरीके से गुलामी में जकड़े देश को आजादी दिलाई। बेशक वे अकेले नहीं थे पर उनका प्रभाव ही जन-जन को अपने साथ आजादी के आन्दोलन में जोड़ता गया और कांरवां बढ़ता जनमेदिनी को देखते ही पं. सोहनलाल द्विवेदी ने ये पंक्तियां लिखी थीं-

चल पड़े जिधर दो डग, मग में चल पड़े कोटि पग उसी ओर।
गड़ गई जिधर भी एक दृष्टि, गड़ गये कोटि दृग उसी ओर।।

किसी एक ने महात्मा कहा तो सबने महात्मा कहना शुरू कर दिया। नाम ठाम सब छोड़ 'महात्मा' सबके दिल दिमाग में पैठ गये। और राष्ट्रपिता! बिना किसी पद और प्रतिष्ठा के गांधीजी सर्वमान्य, लोकमान्य राष्ट्रपिता बन बैठे। सबसे आश्चर्य तो यह कि पूरे विश्व ने गांधी का लोहा माना। विश्व-इतिहास में इतना चर्चित, इतना सम्मानित शायद ही कोई व्यक्ति अन्य हुआ है।

डॉ. भानावत को राष्ट्र भारती सम्मान

उदयपुर (ह. सं.)। पिछले छह-सात दशकों से भारतीय लोककला-संस्कृति के क्षेत्र में अविराम योगदान के लिए डॉ. महेन्द्र भानावत एक सुचर्चित नाम है।

उन्होंने अपने लेखन-प्रकाशन से परम्पराशील भारतीयता के विविध पक्षों का जिस मनोयोग से उद्घाटन किया उसके फलस्वरूप उन्हें 30 सितंबर 2022 को राष्ट्र भारती अकादमी द्वारा श्रीमती राजकुमारी जोशी की स्मृति में राष्ट्र भारती सेवा सम्मान से नवाजा गया।

अकादमी अध्यक्ष धर्मनारायण जोशी, मंत्री भंवरलाल शर्मा तथा कोषाध्यक्ष विजयप्रकाश विप्लवी ने प्रशस्तिपत्र तथा शॉल, स्मृतिचिन्ह देते डॉ. भानावत के योगदान को युवा पीढ़ी के लिए अनुकरणीय बताया। इस अवसर पर डॉ. बी. एल. सोनी, एस.आर. व्यास, प्रवीण खंडेलवाल, बसंत कश्यप, शिवे जोशी, दिग्विजय त्रिवेदी, भूपालसिंह बाबेल, दिनेश शर्मा, कमल कुमावत तथा मीना शर्मा की महनीय उपस्थिति रेखांकित की गई।

नौकरियों में आरक्षण खत्म हो

-डॉ वेदप्रताप वैदिक-

सर्वोच्च न्यायालय में आजकल आरक्षण पर बहस चल रही है। उसमें मुख्य मुद्दा यह है कि आर्थिक आधार पर लोगों को नौकरियों और शिक्षा-संस्थानों में आरक्षण दिया जाए या नहीं? 2019 में संसद ने संविधान में 103 वाँ संशोधन करके यह कानून बनाया था कि गरीबी की रेखा के नीचे जो लोग हैं, उन्हें 10 प्रतिशत तक आरक्षण दिया जाए। यह आरक्षण उन्हीं लोगों को मिलता है, जो अनुसूचित और पिछड़ों को मिलनेवाले आरक्षण भी शामिल नहीं हैं। याने सामान्य श्रेणी या अनारक्षित जातियों को भी यह आरक्षण मिल सकता है।

उसका मापदंड यह है कि उस गरीब परिवार की आमदनी 8 लाख रु. साल से ज्यादा न हो। याने लगभग 65 हजार रु. प्रति माह से ज्यादा न हो। एक परिवार में यदि चार लोग कमाते हों तो उनकी आमदनी 16-17 हजार से कम ही हो। ऐसा माना जाता है कि गरीबी रेखा के नीचे जो लोग हैं, उनकी संख्या 25 प्रतिशत के आस-पास है याने लगभग 30 करोड़ है। इन लोगों को आरक्षण देने का विरोध इस तर्क के आधार पर किया जाता है कि देश के ज्यादातर गरीब तो अनुसूचित लोग ही हैं।

यदि ऊँची जातियों के लोगों को गरीबी के नाम पर आरक्षण दिया जाएगा तो जो असली गरीब हैं, उनका हक मारा जाएगा। इसके जवाब में जजों ने पूछा है कि यदि इस आरक्षण में आरक्षितों और पिछड़ों को भी जोड़ लिया जाए तो आरक्षण की सारी मलाई ये वर्ग ही साफ कर लेंगे। अभी तक कानून यह है कि 50 प्रतिशत से अधिक आरक्षण नहीं दिया जाए। ऐसे में एक तर्क यह भी है कि गरीबों को दिया गया आरक्षण अनुसूचितों के लिए नुकसानदेह होगा।

वास्तव में सरकारी और गैर-सरकारी संस्थानों की नौकरियों में किसी भी आधार पर आरक्षण देना उचित नहीं है। ऐसे आरक्षणों में योग्यता दरकिनार कर दी जाती है और अयोग्य लोगों को कुर्सियां थमा दी जाती हैं। इसके फलस्वरुप सारा प्रशासन अक्षम हो जाता है और भ्रष्टाचार को बढ़ावा मिलता है। नौकरियों में भर्ती का पैमाना सिर्फ एक ही होना चाहिए। वह है, योग्यता! देश के प्रशासन को सक्षम और सफल बनाना हो तो जाति और गरीबी, दोनों के नाम पर नौकरियों में दिए जानेवाले आरक्षणों को तुरंत खत्म किया जाना चाहिए।

उसकी जगह सिर्फ शिक्षा में आरक्षण दिया जाए और वह भी 60-70 प्रतिशत हो तो भी उसमें भी कोई बुराई नहीं है। इस आरक्षण का सिर्फ एक ही मानदंड हो और वह हो गरीबी की रेखा! इसमें सभी जातियों के लोगों को समान सुविधा मिलेगी। समस्त आरक्षित छात्र-छात्राओं को निशुल्क शिक्षा और संभव हो तो भोजन और निवास की सुविधा भी मिलनी चाहिए। जो बच्चे परिश्रमी और योग्य होंगे, वे नौकरियों में आरक्षण की भीख क्यों मांगेंगे? वे स्वाभिमानपूर्वक काम करेंगे। वे हीनताग्रंथि से मुक्त होंगे।

स्मृतियों का इतिहास बुनती छह दशक पुरानी कविता-धारा

सब रंग, सब रस में कविता की शक्ति सबसे उच्च कही गई है। ऐसे में यदि कवि स्वयं अपनी कविता का पाठ करता भावविभोर हो अपने भीगे नयनों से पूरी सभा को रूलाता लगे तो क्या कहेंगे! ऐसी ही घटना का जिक्र करते प्रख्यात कथाकार डॉ. राजेन्द्रमोहन भटनागर ने शब्द रंजन को बताया।

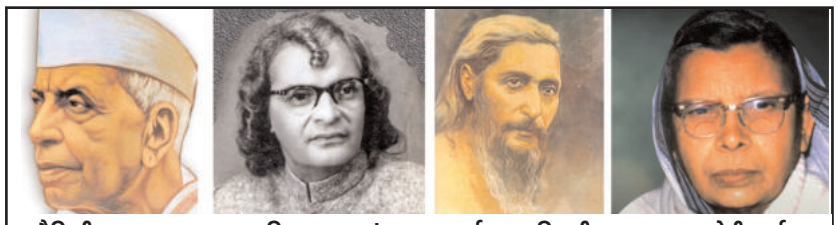

मैथिलीशरण गुप्त | सुमित्रानन्दन पंत | सूर्यकान्त त्रिपाठी | महादेवी वर्मा

उन्होंने 18 अगस्त 2022 को अपनी लम्बी टेलीफोनिक बातचीत में 1956 की आगरा के सेंट जोन्स कॉलेज में पढ़ाई के दौरान अपने अध्यक्षीय काल में आयोजित कविसम्मेलन का स्मरण किया। वह सम्मेलन उस समय तीन महान कवियों का सान्निध्य लिये था। इन त्रिमूर्ति-महाकवियों में सर्वश्री मैथिलीशरण गुप्त, सुमित्रानन्दन पंत और सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' थे। गुप्तजी ने अध्यक्षता की थी।

डॉ. भटनागर ने बताया कि तब पंतजी की ग्रंथि, गुप्तजी की भारत भारती बच्चनजी की मधुशाला, प्रसाद की आंसू नामक कृतियाँ तथा निराला की राम की शक्तिपूजा कविता का बड़ा बोलबाला था। संयोजन स्वयं भटनागरजी ने किया।

डॉ. राजेन्द्रमोहन भटनागर

डॉ. भटनागर ने बताया कि राष्ट्रकवि गुप्तजी ने 'सखि! वे मुझसे कहकर जाते' कविता सुनाई। सिद्धार्थ (गौतम बुद्ध) बिना कुछ कहे चुपचाप घर से निकल पड़ते हैं। इस विरह-वियोग में उनकी पत्नी यशोधरा विलाप करती अपनी सखि से कह रही है- 'सखि! वे मुझसे कहकर जाते, कहते तो क्या मुझको अपनी पथ बाधा ही पाते।' इस कविता में गुप्तजी ने एकसाथ करूणा, वियोग और संयोग का बड़े बेहतरीन रूप में बखान कर सबको उस भावभूमि में पहुंचा दिया जो यशोधरा की रही थी।

प्रकृति के रंजेबंजे कवि पंतजी का व्यक्तित्व ही बड़ा आकर्षक था। उनकी तुलना अंग्रेजी के प्रख्यात कवि कीट्स से करते भटनागरजी ने कीट्स की कविता सुनाई और कहा, कहा जाता है कि पंतजी ने किसी से प्रेम नहीं किया। प्रेम के महासागर पंतजी की दृष्टि में प्रेम किया नहीं जाता, हो जाता है। वह न खड़ा होता है, न बैठा होता है। पंतजी वह नाम है जो प्रेम नहीं करने के लिए बदनाम है पर पंतजी कहते हैं कि कोई व्यक्ति ऐसा नहीं जिसने प्रेम नहीं किया हो। पंतजी ने 'ग्रंथि' के माध्यम से कहा, प्रेम ग्रंथि बनकर सदैव के लिए आरूढ़ हो जाता है। इस मौके पर पंतजी ने ग्रंथि से प्रेम विषयक कविताओं का सस्वर पाठ किया तो तालियों की गड़गड़ाहट के साथ छात्र प्रेमासिक्त हो झूमते नजर आये।

अब बारी थी महाकवि निराला की। भटनागरजी ने कहा, पंतजी की 'चांदनी रात में नौका विहार' तथा निरालाजी की 'राम की शक्तिपूजा' विश्व-साहित्य की अनमोल रचनाएं हैं। निराला बोलने को खड़े हुए तो लगा जैसे साक्षात् परसराम का अवतरण हो गया है। उनकी हष्टपुष्ट लम्बी प्रभाव देती काया, बढ़ी हुई दाढ़ी, बिखरे बाल, ललाट पर तिलक और उसके बीच शोभित लाल टीका।

निरालाजी ने बड़े उग्र ओजस्वी स्वरों में 'राम की शक्तिपूजा' कविता सुनाना शुरू किया कि सारा वातावरण ही एक उन्नत उच्च भूमिका का गम्भीर नाद उर्ध्वगामी पहुंच देता रहा। यह असर इतना जबर्दस्त हुआ कि कविता सुनाते-सुनाते कविश्री निराला एक ऐसी भावभूमि में पहुंच गये जहां कविता रूद्ध होगई और कवि के अश्रुपात के साथ-साथ पूरा माहौल अन्यमनस्क गमगीन हो अश्रु- धारा में प्रवाहित हुआ दिखाई दिया।

भटनागरजी ने बताया कि पूरा वातावरण एक अनहोने सन्नाटे में सुबकी लेता रहा। कुछ देर बाद कॉलेज की हिन्दी व्याख्याता खड़ी हुई। माइक ढाबते वे बोलीं- मेरा यह सौभाग्य रहा कि मेरी गुरु महादेवी वर्मा रहीं। उन्हें भी आज के लिए निमंत्रण दिया गया था किन्तु वे उपस्थित नहीं हो सकीं। पूरे विश्व में उन जैसी विरही कवयित्री दूसरी नहीं हुईं। विरह देतीं उनकी ये पंक्तियां सुनिये-

मैं नीर भरी दु:ख की बदली।
विस्तृत नभ का कोई कोना
मेरा न कभी अपना होना
परिचय इतना, इतिहास यही
उमड़ी कल थी, मिट आज चली
मैं नीर भरी दु:ख की बदली।

उन्होंने कहा, महादेवी वर्मा की तुलना मीरांबाई से की जाती है पर मीरां का विरह उनसे नितांत भिन्न है। मीरां अपने सांवरे से मिलने को आतुर रहकर सदैव दर्द दीवानी बनी रही जबकि महादेवी अपने अज्ञात के प्रति 'बीन भी हूं मैं, तुम्हारी बांसुरी भी हूं' कहकर अपना समर्पण देती रहीं। प्रिय मिलन से दोनों ही वंचित रहीं। जो भी हो, आज अपने समय के तीनों कवियों का जैसा सान्निध्य हमें मिला, वह न भूतो न भविष्यति ही हमारे भाग का सुभाग बन गया है। हमारे स्वांस की तरह आज का यह कवि-समय कविता-रस करता हमारे स्मृतिपटल पर हमें सदैव ही सुखानन्द की अनुभूति देता रहेगा।

जगदीश मंदिर में बालिकाओं द्वारा श्राद्धपक्ष में संज्या मण्डन

वह समय देखते-देखते चला गया जब प्रत्येक गांव-शहर में छत्तीसी कौम की बालिकाओं द्वारा श्राद्धपक्ष में प्रतिदिन संध्या को संज्या मण्डन होता था। 'खुड़-खुड़ रे म्हारा खोड्या जमाई, थूं संज्या ने लेवण आयो रे' गीत-पंक्ति के आधार पर मेरे पापा डॉ. महेन्द्र

भानावत ने सन् 1960 में लोकमहाभारत बगड़ावत से इस व्रतानुष्ठान का कोई हजार वर्ष पुराना इतिवृत्त खोज निकाला था। बाद में मुझे उन्होंने इस विषय पर पीएच.डी. करने को कहा तो मैंने 1993 में यह कार्य सम्पादित किया।

तब की सांजी तो खैर स्वप्नवत ही रह गई। कई वर्ष तक मैंने भी अपने घर की मुख्य दीवाल पर प्रतिदिन गोबर की संज्या बना भांति-भांति के रंगबिरंगे फूलों से उसका नित नवीन सिणगार कर सहेलियों के साथ पूजा-पाती की थी। इसमें दीदी, भाई, मां सब खुले मन से सहयोग कर मेरा उत्साहवर्धन करते।

पिछले एक-दो दशक से वे सारे त्यौहार, उत्सव और लोकानुष्ठान ऐसे लुप्त-गुप्त होते गये कि कुछ कहा नहीं जा सकता। इस बार जगदीश मन्दिर के भीतरी लम्बे फैले परिसर की दीवालों पर जब वहां के कलाप्रेमी पुजारीजी हेमन्त भाई ने इस बालिकोत्सव को पुनर्जीवन देने की सोची तो एक-एक कर अनेक बालिकाएं वहां गोबरफूली संज्या सजाने आ गईं। श्राद्ध के उत्तरार्ध के पांच दिन वहां जो चहल-पहल बनी वह दांतों तले उंगली दबाना देख मैं चकित रह गई।

हेमन्त भाई ने गोबर तथा मुख्य उपलब्ध फूल भगवान जगदीश की असीम कृपा से उपलब्ध करा दिये थे पर बालिकाएं भी होड़ा-होड़ी में अपने द्वारा निर्मित संज्या को अधिकाधिक आकर्षक बनाने ज्वार-मकई के दाने, विविध रंगी पत्नियां तथा बनेबनाये आभूषण लाती रहीं।

उनके साथ उनकी बहिनों और माताओं ने भी अपनी बालकी के साथ बालकी बन संज्या के नाक-नक्श का उभरांकन किया। देशी-विदेशी लोगों का उल्लसित उमावड़ा अनेक तरह की उमंगों को सुवासित करता रहा। इन दिनों समझो, जय जगदीश हरे ने मुझे भी अपना बचपन दिखा दिया। सुन्दरवास निवासी रेखा पुरोहित ने बताया कि उसने कभी श्राद्धपक्ष को रीता नहीं जाने दिया। अपने घर की मुख्य दीवाल पर प्रतिदिन ही उसने संज्या पामणी की। उसकी सांजी सबसे अलग नजारा मारती

भी रही। नन्दिनी सेवक, पुष्पा वारी, भव्या, लक्ष्मी, केसर, गणेशी, लवली सेन, अनिता योगी, कृष्णा बागोरा, कमला पालीवाल, मधुबाला पुरोहित, मधु सिकलीगर, हिमांशी शर्मा, अनिता सोनी, आशा जोशी, अंजना माथुर, खुशबू तम्बोली, प्रमिला सोनी, रोशन तम्बोली ; ऐसे और भी कई नामों के बीच एक भैया हर्ष कुमावत ने सब दिन सांजी सजाई।

हर्ष ने बताया कि मुझे भी शौक चर्राया या कोई पूर्वजन्म का खेला रहा ; पता नहीं पर प्रेरणा हुई सो अपनी बहिनों के बीच एक भाई बन सांजी बनाता रहा। अन्तिम दो दिन कोट अधिक बने जिसमें पिछले दिनों की आकृतियों के झिलमिल के साथ संज्या की विदाई दिखाई गई। अन्त में हेमन्त पुजारी ने भगवान जगदीश की छवि मण्डित करा सबको यादगारी भेंट की। लगा कि अब संज्या गुड़-गुड़ गुड़ल्यो गुड़तो ही जाएगा और उस गुड़ल्ये में बैठी संज्या साथण मुलकाती मिलेगी।

आलेख -डॉ. कहानी भानावत
चित्रांकन जितेन्द्र मेहता

पीएच.डी स्कॉलर्स ने जीता प्रथम पुरस्कार

उदयपुर (ह. सं.)। एसोसियशिन ऑफ क्लिनिकल बायो केमिस्ट ऑफ इंडिया (एसीबीआई) प्रतापगढ़ में चिकित्सा विज्ञान में जैव रसायन पर पहला अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन 24 और 25 सितंबर को डॉ. सोनलाल पटेल स्वायत्त मेडिकल कॉलेज में आयोजित किया गया। सम्मेलन में पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज की जैव रसायन विभाग की प्रोफेसर डॉ. सुमन जैन एक चेयरपर्सन के रूप में शामिल हुई। उनके मार्गदर्शन में पीएच.डी. स्कॉलर ने पोस्टर और ओरल प्रेजेंटेशन में भाग लिया।

इस अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में डॉ. जैन की पीएच.डी. स्कॉलर सुप्रिया और निशा त्रिपाठी ने क्रमश: पोस्टर प्रस्तुति और मौखिक प्रस्तुति श्रेणी में प्रथम पुरस्कार जीता। सुप्रिया ने आदिवासी और गैर-आदिवासी आबादी में टीबी रोगी के निदान के लिए एडीए का मूल्यांकन विषय पर पोस्टर प्रस्तुत किया, जबकि निशा त्रिपाठी ने आदिवासी और गैर-आदिवासी आबादी में पोषण की स्थिति का आकलन विषय प्रस्तुत किया। सम्मेलन में राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिकों ने भी भाग लिया।

लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ को मिला राष्ट्रीय पर्यटन पुरस्कार

उदयपुर (ह. सं.)। मेवाड़ के पूर्व राजपरिवार के सदस्य और देश-दुनिया के जानेमाने युवा होटेलियर लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ को उपराष्ट्रपति जगदीप धनकड़ और केंद्रीय पर्यटन मंत्री किशन रेड्डी ने विश्व पर्यटन दिवस पर दिल्ली में हुए समारोह में राष्ट्रीय पर्यटन पुरस्कार प्रदान किया। लक्ष्यराजसिंह को यह पुरस्कार एचआरएच ग्रुप ऑफ होटल्स की 17 से ज्यादा होटलों में जीवंत विरासत के संरक्षण, संवर्धन और उत्थान के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने के साथ-साथ शिकारवाड़ी और शिवनिवास पैलेस होटल के हैरिटेज होटल की श्रेणी में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने के उपलक्ष्य में प्रदान किया गया।

इससे पूर्व 2017 में भी मेवाड़ को पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद के हाथों सम्मानित किया गया था। वर्ष 2018 में लक्ष्यराजसिंह को यंग अचीवर फॉर प्रिजर्विंग हेरिटेज एवं प्रमोटिंग हॉस्पिटेलिटी के अवार्ड से नवाजा गया। लक्ष्यराजसिंह समाज सेवा, महिला स्वच्छता प्रबंधन, पर्यावरण संरक्षण, स्वेटर वितरण, भोजन वितरण और तीन लाख वस्त्रों का दान कर 6 गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड्स स्थापित कर चुके हैं। कोरोना काल में भारतीय सेना को एंबुलेंस दान और राजस्थान पुलिस के जरिए जरूरतमंदों तक राहत सामाग्री पहुंचा चुके हैं।

बाजार / समाचार

तीन दिवसीय कार्यशाला

उदयपुर (ह. सं.)। राजकीय मीरा कन्या महाविद्यालय में आधार फाउण्डेशन तथा होण्डा मोटरसाइकिल स्कूटी इण्डिया के सौजन्य से तीन दिवसीय (14 से 16

सितम्बर) तक महिला सुरक्षित वाहन चालन प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित की गई। प्राचार्य डॉ. नीलम सिंघल एवं प्रो. अंजना गौतम ने बताया कि छात्राओं तथा संकाय सदस्यों को वाहन चलाने तथा यातायात सम्बन्धी नियमों की पुख्ती जानकारी दी गई। कार्यशाला में शीलमोहन शर्मा, राजशेखर, नारायण चौधरी, डॉ. लाजवन्ती बनावत, डॉ. कीर्ति माथुर, डॉ. श्वेता व्यास, डॉ. मोनिका डूंगरवाल, डॉ. कहानी भानावत, डॉ. श्रद्धा तिवारी, डॉ. इन्दु शर्मा, डॉ. मनिषा चौबीसा, डॉ. सोफिया नलवाया, डॉ. मंजु खत्री एवं मोहम्मद नदीम का उल्लेखनीय योगदान रहा।

आदि महोत्सव में कपड़े के बेग वितरित

उदयपुर (ह. सं.)। यूनाइटेड हाईटेसियर्स ऑफ उदयपुर सोसायटी द्वारा विश्व पर्यटन दिवस पर प्रशासन द्वारा आयोजित आदि महोत्सव 2022 में

पर्यावरण संरक्षण एवं ग्रामीण टूरिज्म को बढ़ावा देने के उद्देश्य से #SAYNO-TOPLASTIC के संदेश वाले कपड़े के थैले जिला कलक्टर ताराचंद मीणा, डिप्टी डायरेक्टर टूरिज्म सुश्री शिखा सक्सेना एवं अन्य जनप्रतिनिधियों की उपस्थिति में सोसाइटी के अध्यक्ष यू. बी. श्रीवास्तव, सचिव रूपम सरकार एवं कोषाध्यक्ष उज्वल मेनारिया ने कोटड़ा में वितरित किए। इसके अलावा सोसाइटी के सदस्य होटल्स के 25 स्टाफ सदस्यों ने भी आयोजन को सफल बनाने में अपनी सेवाएं प्रदान की।

फेस्टिव ट्रीट्स में 10,000 से ज्यादा ऑफर्स

उदयपुर (ह. सं.)। एचडीएफसी बैंक इस फेस्टिव सीज़न को और ज्यादा बड़ा व बेहतर बनाने के लिए फेस्टिव ट्रीट्स 4.0 लाया है, जो इसके वार्षिक अभियान का चौथा संस्करण है। इसमें एचडीएफसी बैंक के सभी बैंकिंग और लेंडिंग उत्पादों पर आकर्षक ऑफर एवं शॉपिंग पर छूट प्राप्त होगी।

इस अनुभव को और ज्यादा सुगम बनाने के लिए बैंक ने ग्राहकों का सफर ऑनलाईन बनाने के लिए अपने डिजिटल चैनल्स का उपयोग किया है। उदाहरण के लिए, ग्राहकों को तत्काल नया क्रेडिट कार्ड प्राप्त हो सकता है और वो एप्पल के साथ एचडीएफसी बैंक के एक्सक्लुसिव टाई-अप का लाभ ले सकते हैं, जिसके तहत उन्हें कार्ड और इज़ी ईएमआई पर 5000 रु. का कैशबैक मिलता है। इसके अलावा, स्मार्टबाय द्वारा अतिरिक्त बचत कर सकते हैं। ग्राहकों को 10 सेकंड में पर्सनल लोन, 30 मिनट में एक्सप्रेस कार लोन, तथा कार्ड पर लोन या पूरी तरह से ऑनलाईन इंस्टा अकाउंट खोलने की सुविधा मिल सकती है। इस साल की थीम ''गो बिग दिस फेस्टिव सीज़न'' जश्न मनाने और बड़ी खरीद करने के समय को इंगित करती है। बैंक ने विभिन्न ग्राहकों को 10,000 से ज्यादा ऑम्नी-चैनल ऑफर प्रदान करने के लिए पूरे भारत के मर्चेंट्स के साथ टाई अप किया है।

आकाश बायजू द्वारा वृक्षारोपण अभियान

उदयपुर (ह. सं.)। परीक्षण तैयारी सेवाओं में नेशनल लीडर आकाश बायजू ने 2022 में अपने आश्चर्यजनक परिणामों का जश्न मनाने के लिए उदयपुर में वृक्षारोपण अभियान चलाया। संस्थान ने 181 पेड़ लगाए, उदयपुर शाखा के एनईईटी, जेईई (मेन) और जेईई एडवांस 2022 के181 छात्रों ने उत्तीर्ण किया है। अब्दुल रहमान, डीएसपी, अपराध शाखा, मुख्य अतिथि थे, जिनके साथ आकाश बायजू के अधिकारी उपस्थित थे। वक्ताओं ने छात्रों को प्रकृति और पर्यावरण के महत्व के साथ-साथ सतत विकास के महत्व और पर्यावरण को संरक्षित करने के तरीके के बारे मेंशिक्षित किया।

डॉ. कमलेश शर्मा संयुक्त निदेशक बने

उदयपुर (ह. सं.)। राजस्थान सूचना एवं जनसंपर्क सेवा के वर्ष 2005 बैच के अधिकारी और उदयपुर के जनसंपर्क

उपनिदेशक डॉ. कमलेश शर्मा को संयुक्त निदेशक पद पर पदोन्नत किया गया है। राज्य सरकार के सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग की ओर से जारी एक आदेश के तहत विभागीय पदोन्नति समिति की अभिशंसा पर डॉ. शर्मा को वर्ष 2022-23 की रिक्ति पर उपनिदेशक से संयुक्त निदेशक पद पर पदोन्नत किया गया है। उल्लेखनीय है कि बाँसवाड़ा जिले के बड़ोदिया गाँव के मूल निवासी डॉ. शर्मा वर्ष 2019 से उदयपुर में कार्यरत है और इससे पहले वे डूंगरपुर, बाँसवाड़ा और प्रतापगढ़ जिले में अपनी सेवाएं दे चुके हैं।

ऑल-न्यू कैंपेन लॉन्च

उदयपुर (ह. सं.)। माउंटेन ड्यू ने हमेशा ही उन लोगों की हिम्मत का जश्न मनाया है या सराहा है जो अपने डर पर जीत पाकर असाधारण परिणाम हासिल करने में पूरी जान लगा देते हैं। युवाओं को प्रेरित करने के लिए एक बार फिर इस बेवरेज ब्रांड ने एक ऑल-न्यू कैंपेन लॉन्च किया है जो उपभोक्ताओं को उनके डरों पर जीत पाकर ज़िंदगी की दौड़ में विजेता बनने के लिए प्रोत्साहित करता है।

मोबिल और 'विक्रम वेधा' में साझेदारी

उदयपुर (ह. सं.)। भारत में इंजन ऑयल के प्रमुख ब्रांड, मोबिल ने ऐक्शंन थ्रिलर 'विक्रम वेधा' के साथ साझेदारी की है। ऋतिक रौशन, सैफ अली खान और राधिका आप्टे के अभिनय से सजी इस फिल्म के साथ जुड़कर, मोबिल इंसानों की प्रगति को बढ़ावा देने, उनमें आत्मविश्वास पैदा करने और ग्राहकों को उनकी असली क्षमता पहचानने की अपनी ब्रांड वैल्यू पर जोर देना चाहता है।

एक्सॉन मोबिल लुब्रिकेंट्स प्रा. लि. के सीईओ, विपिन राणा ने कहा कि 'विक्रम वेधा' जैसी फिल्मों के साथ सहयोग करना ग्राहकों से जुड़ने और हमारी अलग-अलग ताकतों पर जोर देने की हमारी रणनीति का हिस्सा है। इस फिल्म में मोबिल सुपर मोटो इंजन ऑयल को दिखाया गया है जो टू-व्हीलर्स के इंजन को शानदार सुरक्षा देने के लिए उद्योग में सबसे अलग पहचान रखता है। इसमें इंजन की सुरक्षा के महत्व पर जोर दिया गया है।

रिलायंस एंटरटेनमेंट के हेड - मार्केटिंग, समीर चोपड़ा ने कहा कि विक्रम वेधा को फ्राइडे फिल्मवर्क्स, जियो स्टूडियोज और वाईनॉट स्टूडियोज के सहयोग से गुलशन कुमार, टी-सीरीज और रिलायंस एंटरटेनमेंट द्वारा प्रस्तुत किया गया है। फिल्म का निर्देशन पुष्कर और गायत्री ने किया है और निर्माता भूषणकुमार, एस. शशिकांत और रिलायंस एंटरटेनमेंट हैं।

डॉ. सिंघानिया लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित

उदयपुर (ह. सं.)। जेके टायर एण्ड इण्डस्ट्रीज लि. के चेयरमैन एण्ड मैनेजिंग डायरेक्टर डॉ. रघुपति सिंघानिया को पीएचडीसीसीआई के 117वें वार्षिक सत्र में प्रतिष्ठित 'लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड 2022' से लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने सम्मानित किया गया।

डॉ. सिंघानिया ने कहा कि मुझे यह सम्मान देने के लिए मैं पीएचडी चैंबर ऑफ कॉमर्स एण्ड इण्डस्ट्री और जूरी सदस्यों का शुक्रगुजार हूं। यह पुरस्कार इनोवेशन और सहयोगात्मक प्रयासों के साथ समाज की सेवा करने की दिशा में जेके समूह के प्रयासों का प्रमाण है। मैं अपने सहयोगियों और उद्योग भागीदारों को भी हमारी सफल यात्रा में उनके समर्थन के लिए धन्यवाद देना चाहूंगा। गौरतलब है कि डॉ. सिंघानिया को हाल ही में द इकोनॉमिक टाइम्स सीईओ कॉन्क्लेव 2022 में उनके महत्वपूर्ण योगदान को मान्यता देते हुए इंसपायरिंग सीईओ पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

एचडीएफसी को सर्वश्रेष्ठ लेंडिंग समाधान' का सम्मान

उदयपुर (ह. सं.)। एचडीएफसी बैंक की उद्योग में प्रथम प्रस्तुति 'एक्सप्रेस कार लोन' को नेशनल पेमेंट्स कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया; पेमेंट्स काउंसिल ऑफ इंडिया; और फिनटेक कन्वर्जेंस काउंसिल द्वारा आयोजित ग्लोबल फिनटेक फेस्ट में 'श्रेणी के सर्वश्रेष्ठ लेंडिंग समाधान' का सम्मान मिला है।

अरविंद कपिल, कंट्री हेड - रिटेल एस्सेट्स, एचडीएफसी बैंक ने कहा कि 'एक्सप्रेस कार लोन' एक इनोवेशन है, जो डीलर के खाते में 30 मिनट के अंदर पैसे पहुँचा देता है। इसका लॉन्च मौजूदा वित्तवर्ष की शुरुआत में किया गया था। यह मौजूदा ग्राहकों एवं नए ग्राहकों के लिए एक एंड-टू-एंड डिजिटल नया कार लोन है। इसके लिए बैंक ने अपने लेंडिंग एप्लीकेशन को देश में ऑटोमोबाईल डीलर्स के साथ इंटीग्रेट किया है। बैंक देश में कार फाईनेंस कराने के तरीके में क्रांति लाना चाहता है। हमें इस प्लेटफॉर्म पर यह सम्मान हासिल करने की खुशी है। एक्सप्रेस कार लोन का जन्म इस जानकारी के साथ हुआ कि कार खरीदने के लगभग 90 प्रतिशत सफर ऑनलाईन शुरू होते हैं, लेकिन वो इसे पूरा नहीं कर पाते हैं। यह लोन एंड-टू-एंड डिजिटल सफर द्वारा इस अंतर को दूर करेगा और देश में कार फाईनेंस कराने के तरीके में क्रांति ला देगा।

'हर घर केडीएम' अभियान शुरू

उदयपुर (ह. सं.)। उपभोक्ताओं के प्रमुख लाइफस्टाइल और प्रीमियम मोबाइल एक्सेसरीज ब्रांड के.डी.एम. की राजस्थान और गुजरात के भागीदारों और सहयोगियों की बैठक उदयपुर में आयोजित की गई। इसमें दोनों राज्यों के डीलर और वितरक मौजूद थे। यह आयोजन के.डी.एम. की 10वीं वर्षगाँठ 'जश्न 10 साल का, नींव 100 साल की' का उत्सव मनाना भी था और इस ब्रांड का लक्ष्य 2025 तक 'हर घर के.डी.एम.' के उद्देश्य के साथ देश के हर शहर और दूरदराज़ के इलाके में घर-घर में पाया जाने वाला एक नाम बनना है।

भारत गौरव पुरस्कार प्राप्त एन. डी. माली ने 2025 तक 'हर घर के.डी.एम.' के उद्देश्य को पूरा करने के लिए शिक्षित करने, सशक्त बनाने और विकसित करने का प्रेरक और उत्साहवर्धक मंत्र प्रदान किया। सह-संस्थापक, भंवरलाल सुथार ने कहा कि वितरक हमारी कंपनी का एक महत्वपूर्ण अंग हैं। उनके साथ काम करना और कंपनी के समग्र विकास में उनके अमूल्य योगदान के लिए उनको सम्मानित करना हमारे लिए सौभाग्य की बात थी। 75वें स्वतंत्रता दिवस की थीम पर आधारित एक विशेष संस्करण पत्रिका, के.डी.एम. कनेक्ट का भी शुभारंभ किया गया।

सॉल्वेंट एक्सट्रैक्टर्स एसोसिएशन ऑफ इण्डिया की 51वीं एजीएम और अवॉर्ड समारोह

उदयपुर (ह. सं.)। सॉल्वेंट एक्सट्रैक्टर्स एसोसिएशन ऑफ इण्डिया एसईए की जीएम के दौरान विशेषज्ञो के पैनल डिस्कशन में एक बात उभर कर सामने आई कि इस बार मानसून के मेहरबान रहने से खरीफ में तिलहनी फसलों की बम्पर पैदावार की उम्मीद है। खासकर सरसों की फसल काफी अच्छी होगी। एजीएम में किसानों के हित और फसलों के सुधार के लिए मिलेजुले प्रयासों पर जोर दिया गया। पदाधिकारियों ने फ्यूचर कारोबार को फिर से शुरू करने पर जोर देते हुए कहा कि इसका उपयोग और कई अन्य लाभों की सहजता के कारण यह कारोबार कई कारोबारियों के लिए डिफॉल्ट कारोबारी विधि है। मुख्य वक्ता केन्द्रीय वाणिज्य मंत्रालय खाद्य सचिव सुधाशुं पाण्डेय ने कहा कि चीन के बाद भारत आबादी के मामले में दूसरे स्थान पर है जिस प्रकार आबादी का विस्तार हो रहा है। आगामी 25 वर्ष के बाद आबादी के अनुपात में प्रत्येक खाद्य वस्तुओं की मांग बढ़ेगी। इसलिए सभी उत्पादकों को उसी अनुपात में अपने उत्पादो को और गति देनी होगी।

कुंवारों के देश में.....

(पृष्ठ तीन का शेष)

मध्यप्रदेश के अलीराजपुर जिले के नानपुर में विधिविधान से एक दूल्हे ने अपनी तीन दुल्हन के साथ शादी रचाई। नानपुर ग्राम के मोरीफलिया में ग्राम नानपुर के पूर्व सरपंच समरथ मौर्य ने करीब 15 साल बाद सामाजिक रीति-रिवाज और परम्परा अनुसार अपनी तीन प्रमिकाओं के साथ सात फेरे लिये। शादी के इस जश्न में उनके छह बच्चे भी शरीक हुए।

बताया जाता है कि समरथ गरीबी के चलते तीनों प्रेमिकाओं से शादी नहीं कर पाए थे। पन्द्रह साल बाद आर्थिक रूप से समर्थ होने के बाद शादी की। दरअसल समरथ भिल्ला आदिवासी समाज से हैं जहां बिना शादी समाज व परिवार के शुभ कार्य में आना-जाना, पूजा-पाठ आदि में सम्मिलित नहीं हुआ जा सकता। अब वे मांगलिक कार्यों में सम्मिलित हो सकेंगे।

इससे भी अधिक चकित कर देने वाला समाचार उदयपुर जिले की कोटड़ा तहसील का है जहां पास के गुणभाखरी से जो अनूठी बारात आई उसमें तो दूल्हा पिछले 60 वर्ष से अपनी प्रेमिका के साथ जीवनयापन कर रहा था। एक समाचार के अनुसार-

उदयपुर जिले की कोटड़ा तहसील के गऊपीपला में अनूठी बारात निकली जिसमें दूल्हा 80 साल का था। बारात में दूल्हे के 9 बेटे-बेटियों सहित 20 पोता-पोती, नवासा-नवासी शामिल हुए। यह अनूठा विवाह गऊपीपला निवासी सकमा पुत्र धुलिया पारगी का हुआ जो गुजरात के गुण भाखरी से दुल्हन मठु को ब्याह कर लाया। हालांकि सकमा के साथ मठु पिछले 60 साल से लिवइन में रह रही थी। शादी की रस्में अब अदा की गई। सकमा पारगी के काना, बसु, राकेश, चंदू, पिंटू, भूलाराम, मणि, सुमी व मेवा नौ बेटा-बेटियां हैं। इसके अलावा सकमा व मठु के 20 पोते-पोतियां हैं। पूरे परिवार के साथ सकमा की बारात ढोल-डीजे की थाप पर गुजरात के गुण भाखरी गांव पहुंची। वहां सकमा ने मठु के साथ सात फेरे लेकर शादी की रस्में अदा कीं।

उदयपुर के कोटड़ा, झाड़ोल, पाली, बाली, सिरोही सहित गुजरात के आदिवासियों में सदियों से दापा प्रथा है। इसमें युवक-युवती आपस में सहमति के साथ रहते हैं। इसके बाद युवक, युवती के पक्ष को कुछ राशि देता है जिसे दापा कहते हैं। इस राशि का फैसला सामाजिक स्तर पर किया जाता है। उसके बाद दोनों साथ रहने लगते हैं और बाद में सहूलियत के अनुसार शादी करते हैं।

आबू रोड़ के ओर गांव के गरासिया संस्कृति के अध्येता मगनलाल खंडेलवाल ने बताया कि गरासियों में महिला सर्वाधिक सुरक्षित है। एक-एक गरासिया दो-दो, तीन-तीन औरतों से लेकर सत्रह औरतें रखने तक के भी किस्से प्रचलित हैं। उसके फैले हुए खेत होते हैं। भयंकर मुसीबत में भी वह खेत को कभी नहीं बेचता। अपनी औरतों को वह जुदा-जुदा खेत देकर उन्हें उनकी मालकिन बना देता है। अलग रहने के लिए उन्हें झोंपड़ी देता है। खेतीबाड़ी का सारा काम औरतें करती हैं जो पुरुषों से अधिक श्रमशील होती हैं।

यदि कोई औरत बीमार हो जाती है तो सबसे पहले इसकी सूचना उसके पीहर मां-बाप को भिजवानी होती है। उसके मां-बाप उससे मिलने आते हैं और इस बात की पूरी छानबीन करते हैं कि उसका इलाज ठीक से कराया जा रहा है या नहीं। सुसराल में उसे किसी प्रकार का कष्ट तो नहीं है। यदि किसी स्त्री की मृत्यु हो जाती है तब भी उसके पीहर खबर भेजी जाती है और पीहर वालों के आने पर ही उसका अंतिम संस्कार किया जाता है। मृतक के सगे इस बात की पूरी जांच करते हैं कि उसकी मृत्यु प्राकृतिक हुई है या किसी षड़यंत्र की वजह से की गई है।

प्राकृतिक मृत्यु नहीं होने की स्थिति में बहुत बड़ा झगड़ा खड़ा हो जाता है। ऐसी स्थिति में लड़की के पीहर वाले तथा अन्य समधी तीर-तलवार-भाले आदि से सुसज्जित हो उन पर धावा बोल देते हैं। तब गांव वाले भी उनकी रक्षा-सुरक्षा नहीं कर पाते हैं। वे घर जला देंगे। मवेशी लूट घर का धन-माल ले जायेंगे और उस गांव के लिए भी खतरा पैदा कर देंगे। इस स्थिति की पूर्व आशंका से कभी-कभी लड़की के सुसराल वाले अपना घर छोड़ अन्यत्र भागते-छिपते भी सुने गए हैं।

कदाचित समझौते के लिए पंचायत भी बैठाई गई तो आक्रमणकारियों को बात-बात पर नेग देना पड़ेगा। जैसे हाथ से तीर नीचे रखवाई का नेग। कमरबंधा खुलवाई का नेग। जूते खुलाई का नेग। छाया में बैठने का नेग। ऐसे नेग-पर-नेग और उसके पैसे-पर-पैसे बढ़ते जायेंगे। यह राशि भी इतनी अधिक हो जायेगी कि उस परिवार के लिए बहुत भारी पड़ेगी। यह वैर यानी झगड़े की रकम कहलाती है। इसे आक्रमणकारी आपस में बांट लेते हैं। कभी-कभी वैर नहीं चुका पाने की स्थिति में उससे अंटस बंधी रहती है। ऐसी स्थिति में दो-दो, तीन-तीन पीढ़ियों तक यह वैर चलता हुआ अंत में सात-सात पीढ़ियों तक भी यह वैर चलता रहेगा मगर गरासिया हत्या का बदला ले करके ही दम लेगा।

यह दण्ड मौताणा नाम से जाना जाता है। वर्तमान में इस सामाजिक समझौते जैसी प्रथा में अनेक विकृतियां घुस आई हैं। इस सम्बन्ध में राजस्थान पत्रिका में प्रकाशित यह समाचार उल्लेखनीय है। उसके अनुसार मौताणा प्रथा की शुरूआत रियासतकाल में कोटड़ा ब्लॉक से हुई। धीरे-धीरे समय के अनुसार इसका स्वरूप बदलता गया। इसकी शुरूआत में इसका जो उद्देश्य था वो सही था लेकिन समय के साथ इसका स्वरूप बदल कर कुप्रथा में परिवर्तित हो गया जैसे चढ़ोतरा, लूटपाट, आगजनी जिससे गांव के गांव व परिवार के परिवार उजड़ते चले गये। परिवारों का पलायन हो गया, जिससे यह कुप्रथा के रूप में उभरती चली गयी।

यह प्रथा महिला-हत्या से ही सम्बन्धित नहीं होकर पुरुष-मृत्यु तक भी पहुंच गई है। मौत या हत्या के अलावा किसी को इरादतन मौत के घाट उतारने जैसे प्रसंग में भी मौताणा राशि वसूल की जाने लगी है। अब तो बिचौलियों की भी बहार आ घुसी है। यथा-

अमूमन ससुराल में किसी महिला की अकाल मौत या हत्या के अलावा किसी व्यक्ति को इरादतन मारने जैसे प्रसंग में आदिवासी समाज के मुखिया, पंच-पटेल जुटते थे और मृतक परिवार को आरोपी पक्ष से तात्कालीन मदद मुहैया कराते थे। यह मौताणा राशि दोषी परिवार की हैसियत देखते हुए पंच-पटेल जाजम पर सबके सामने तय करते थे लेकिन अब इसमें 'बिचौलिये' आ घुसे, जो मामला सुलटाने में कथित रूप से अपना प्रतिशत तय कर आधी से ज्यादा राशि ले जाते हैं और मृतक आश्रित को महज कुछ राशि देते हैं। आत्महत्या, सर्पदंश व दुर्घटना के मामले में जबरन मौताणा किया जाने लगा है।

झाड़ोल के नया गांव का युवक सगपुरा खाखड़ जाने के लिए निकला जो आठ दिन तक घर नहीं पहुंचा। उसका शव गांव में ही एक कुएं में मिला। ग्रामीणों ने घटना की सूचना थाने में दी। परिजन व ग्रामीणों ने पहुंचकर मौताणे की मांग रख दी। दिनभर वार्ता में निपटारा नहीं होने पर परिजन चले गये। अगले दिन मौताणे का निपटारा होने पर शव उठाया गया।

लड़की को इस बात की पूरी आजादी है कि यदि वह अपने वर्तमान पति से संतुष्ट नहीं है तो उसे छोड़कर किसी दूसरे के साथ जा सकती है। ऐसी स्थिति में पंचायत बैठती है जो दावे के रूप में नव पति से दुगुनी राशि वसूल करती है। यह रकम लड़की के पिता तथा पूर्व पति को आधी-आधी दे दी जाती है। गरासिया कभी अकेला नहीं होगा। वह जहां भी जायेगा, स्त्री-पुरुष दोनों साथ-साथ होंगे, साथ-साथ नाचेंगे। कोई त्यौहार-उत्सव हो चाहे मेला-ठेला, हाट हो; हंग-संग युवक-युवतियों और पुरुष-महिलाओं का झुंड साथ-साथ चलेगा।

मगनलाल खंडेलवालजी ने बताया कि आजकल कहीं-कहीं जातपांत के बंधन टूटते नजर आ रहे हैं। जो गरासिया भील महिला से शादी कर लेता है उसे जाति से बाहर कर दिया जाता है। फिर वह गरासिया नहीं कहला 'भील-गरासिया' कहलाता है। यों भी गरासिया लोग अपने को भीलों से ऊंचा मानते हैं। भील-गरासिया को भील लोग अपनी जाति में सहर्ष अपना लेते हैं। इस तरह कोई भील किसी गरासिया के साथ रहने लग जाता है तो उसे भी गरासिया कहा जाता है। कहीं-कहीं 'गमेती-गरासिया' भी कहते हैं।

गरासियों में देवता के रूप में 'घोड़ा बावसी' की बड़ी मान्यता है। यों राजस्थान के विभिन्न अंचलों में घोड़ादेव विभिन्न रूपों में मान्यता लिये हैं। देवस्थान देवरों में घोड़े पर सवार देवता की माटी अथवा पत्थर पर बड़ी कलात्मक छवि मिलती है।

आदिवासी क्षेत्रों में तो पांच-पांच, सात-सात घोड़े तक चढ़ाये जाते हैं। इनमें कहीं कल्लाजी राठौड़ के नाम से, कहीं पादरमाता के नाम से तो कहीं मामादेव के नाम से घाड़े चढ़ाये जाते हैं। घोड़ा पूजन की परम्परा मध्यप्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, उत्तरप्रदेश, मिथिला, नेपाल जैसे अंचलों में भी लोकप्रिय है।

गरासियों में तो घोड़ा बावसी की मानता बड़ी जोरों की देखने को मिली। उनकी भाखरपट्टा बस्ती में एक चबूतरे पर इतने घोड़े चढ़े हुए हैं कि आश्चर्यचकित होना पड़ता है। घोड़े पुराने होने अथवा खंडित होने पर वहां से हटा लिये जाते हैं पर उन्हें कहीं फैंका नहीं जाता है। किसी वृक्ष के पास अथवा उसी देवस्थान के पीछे एकत्र कर लिये जाते हैं फिर उन्हें छूता भी कोई नहीं है। कहावत भी है- 'उतरी हींगाण मंदर पाछै।'

सिरोही क्षेत्र में विपदा आने पर कोई जन मामाजी के थानक पर घोड़ा चढ़ा आता है। इससे उसकी विपदा जाती रहती है। इधर कालण्डी के पास करोड़िया थानक पर चार-चार फीट तक के घोड़े चढ़े मिलते हैं। कुशलगढ़ की ओर वगांचादेव के नाम पर घोड़े चढ़ाते हैं। खड़िया भीलों में इनकी अधिक मान्यता है।

इसमें कोई दो राय नहीं कि राजस्थान की आदिम जातियों में गरासिया जाति ही सर्वाधिक सम्पन्न जाति है। अकाल के भीषण से भीषण दुर्दिनों में भी यह जाति कभी घुटने नहीं टेकेगी और न कभी हार मानती हुई नजर आएगी।

बुढ़ापे में कष्ट पाना उन्हें बर्दास्त नहीं है। ऐसे बूढ़े जो बड़े कष्ट में जीते हैं, मौत को आमंत्रण देते हैं पर मौत बुलाने पर भी नहीं आती है। ऐसी स्थिति में उनके परिवार वाले मौत को बुलाने की मनौती लेते हैं। यह मनौती पहाड़ स्नान कराने के रूप में होती है। पहाड़ स्नान का अर्थ पहाड़ जलाने से है। मनौती पूरी करने की दशा में पहाड़ में आग लगा दी जाती है। इसे 'पहाड़ नहाना' कहते हैं। जंगल की शुद्धि के लिए भी गरासिया इसे जरूरी समझते हैं। इसके बाद का वनांचल सर्वथा नये परिवेश में प्रस्फुटित हुआ लगता है। ऐसे पहाड़ खासकर गर्मियों में अनेक जगह जलते देखने को मिलते हैं जिन पर काबू पाना भी मुश्किल हो जाता है।

संदर्भ सूत्र :

1. द्रष्टव्य कुंवारे देश के आदिवासी, डॉ. महेन्द्र भानावत, भारतीय लोककला मंडल, उदयुपर, वर्ष 1993
2. द्रष्टव्य राजस्थान की लोककथाएं, डॉ. महेन्द्र भानावत, प्रभात पेपर बेक्स, नई दिल्ली, 2022, पृष्ठ 109
3. वही पृष्ठ 41-42
4. तीन प्रेमिकाओं से एकसाथ रचाई शादी, बच्चे भी शामिल, राजस्थान पत्रिका, उदयपुर, 03 मई 2022, पृष्ठ 17
5. 60 साल से लिवइन, अब 9 बेटे-बेटियों ने कराई 80 वर्षीय पिता की शादी, बाराती बने 20 पोते-पोतियां, दैनिक भास्कर, उदयपुर 16 अप्रेल 2022, पृष्ठ 1
6. मौताणा : मृतक आश्रित को राहत देने की थी प्रथा, बिचौलियों ने कर दिया मटियामेट, राजस्थान पत्रिका, उदयपुर, 24 अक्टूबर 2021, पृष्ठ 2

करम गति टारत नांही टरे

बीकानेर में रह रही डॉ. महेन्द्रजी की छोटी बहिन सुधा नागोरी के पुत्र प्रमोद (52) का 27 सितम्बर को देवलोक हो गया। पिछले दो वर्ष से किडनी रोग से बेहाल प्रमोद का भाई-भाभी अमित-

कल्पना तथा पत्नी अनिता ने जी तोड़ कोशिश कर कभी अहमदाबाद, कभी जयपुर तो कभी बीकानेर के अस्पतालों की खाक छानते पुख्ता माकूल इलाज कराया पर हरिइच्छा के आगे सब बेबस रहे। पुत्र वैभव ने मुखाग्नि दी और पगड़ीबंधी की। राजा, जिनेश, स्तब्ध रह गये।

देखते-देखते कोटा से बहिन रीना और बेटा-बहू निखिल-दीक्षा जारोली, जयपुर से डॉ. संजीव भानावत तथा उदयपुर से डॉ. कहानी-जितेन्द्रजी मेहता, डॉ. तुक्तक और कला, नरेन्द्र वया, दिल्ली से अनामिका, जोधपुर से प्रकाश, नरेन्द्र, भीलवाड़ा से चाची तथा महावीर, मुम्बई से बुआ-फोफा सावणी-राजेशजी एवं बड़ीसादड़ी से श्वसुर परिजन शांतिलाल, ऊंकारलाल, अजय, सीमा आदि बीकानेर पहुंचे। डॉ. कविता-डॉ. सतीश मेहता का बीकानेर में ही रहने के कारण हर समय सहयोग-सम्बल रहा। वहां कोटड़ी में बिराजित आचार्य रामलालजी म.सा. के सुशिष्य वीरेन्द्र, संजय मुनि के दर्शन कर शोकमग्न परिवार को सान्त्वना मिली। **- डॉ. सतीश मेहता**

डॉ. संगम मिश्र लंदन में सम्मानित

उदयपुर (ह. सं.)। सेंट्रल एकेडमी ग्रुप ऑफ स्कूल्स के चैयरमेन डॉ. संगम मिश्र ने 27-28 सितंबर को इंडो-यूके लीडरशिप समिट में ब्रिटिश पार्लियामेंट में व्याख्यान दिया। डॉ. मिश्र ने कहा कि भारतीय अपनी प्रतिभा एवं परिश्रम के बल पर वसुधैव कुटुम्बकम की भावना जागृत करते हुए पूरे विश्व में अपना योगदान दे रहे हैं। इस अवसर पर डॉ. मिश्र को भारत में शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान एवं सराहनीय नेतृत्व के लिए ब्रिटिश पार्लियामेंट में सांसद वीरेन्द्र शर्मा ने वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्ड्स से सम्मानित किया।

राजस्थानी लोककलाओं का सर्वेक्षण (19)

- डॉ. महेन्द्र भानावत -

रामरसायण :

यह मुख्यत: आसोज में गाया जाता है। इसमें रामजन्म से लेकर रावण-वध तक की कथा रहती है। यहां रामादि चारों भाइयों के नामकरण संस्कार विषयक एक स्थल दिया जा रहा है-

आंगण लीपांवां जी केल कस्तूर भरो पर मोत्यां चोक पुराय।
दो दोई पंडत तो बड़ पोल खड़ा पर दो डोड्यां के बीच।
घर को जोशी राई आंगणा र सोधे कंवर को नाम।
पतरोई बांचे बरामण जबाब करे सुण बाला की मांय।
भला नगतरां बालो जनमियो चारां का अम्मर नाम।
चरत भरत तो जाया राणी केकया र कोशल्या भगवान।
छोटा भाई जाया राणी सुभदरा र लछमन आयो नाम।
कांई का बणावां कंवरजी के पालणा र कांई की बणावां डोर।
कांई को गालां हींदड़ो र कुण मचोला देई।
अगद चंदण को कंवरजी के पालणो र पट रेशम की डोर।
हींदा घालो मोती म्हेल में र दायां मचोला देई।
एक मचोलो चारूं थंभ थरथरिया हाली गड़ां की नींव।
राजा कांप्योजी लंकापति म्हारो राज खोस ले जाय।

रणथंभोर : 11 मई 1969

सवाईमाधोपुर से बारह किलोमीटर दूर रणथंभोर का समुद्र की सतह से 481 मीटर ऊँचा पहाड़ी पर बना सुप्रसिद्ध गढ़ है। इसमें

रणथंभोर के गणेशजी

गणेशजी का मन्दिर है। इस मन्दिर में गणेशजी की जो प्रतिमा प्रस्थापित है वह केवल धड़ रूप में ही है। इसके सिन्दूर चढ़ा हुआ है। यह मूर्ति यहीं निकली कहा जाता है। इसके दोनों ओर ऋद्धि-सिद्धि की प्रतिमा है जो बाद में पदराई गई ज्ञात होती है। गणेशजी की यह सबसे बड़ी धाम कही जाती है। यहां अखण्ड दीपक प्रज्वलित रहता है। इनके पान-पतासे चढ़ाये जाते हैं। विवाह शादी में सर्वप्रथम निमंत्रण इन्हीं गजानंदजी के नाम पर दिया जाता है। इन दिनों इनके नाम से भेजी जाने वाली सैकड़ों कुंकुम पत्रिकाएँ पहुंचती हैं। निमंत्रण के अतिरिक्त स्वयं लोग भी इन्हें आमंत्रित करने आते हैं।

मैं जब यहाँ पहुंचा तो ऐसे कई व्यक्ति वहाँ बैठे हुए थे और गणेशजी को विवाह में पधारने के लिए अरज करवा रहे थे। पुजारा वहाँ बैठा-बैठा बोल रहा था- 'ये फलाणे गाम का फलाणे लालजी हैं। अणारे लड़का फलाणाचंद का फलाणी मिति ने फेरा है जो आपने ऋद्धि-सिद्धि सहित पधारणो है।' यह कह कर पुजारा प्रसाद के रूप में उन्हें नुगती देता हुआ कहता है कि इसे विवाह पर जब मिष्ठान्न बने तब रद (भण्डार घर) में रख देना। विनायक स्थापना पर पाटे पर रखने हेतु इसके साथ-साथ वह पीले चावल तथा पांच कंकरियां भी देता है और कहता है कि जब विवाह निर्विघ्न समाप्त हो जाय तो देवताओं की विदाई पर पांच ब्राह्मण जीमा देना।

यात्री रवाना हो गये। उसके बाद मैंने पुजारा से कईएक बातें पूछीं। उसने सर्वप्रथम उस दिन आने वाली कुंकुम पत्रिकाओं का बंडल मुझे थमा दिया। मैं बंडल खोल-खोल उन सारी कुंकुम पत्रिकाओं को पढ़ता रहा। बहुत नजदीक की और बहुत दूर-दूर की छोटी-मोटी हाथ की लिखी तथा प्रेस में छपी विविध कुंकुमाओं में विनायकजी महाराज को निमंत्रित किया गया था। पुजारा कह रहा था ज्योंही डाक आती है, एक-एक पत्रिका अक्षरश: गजानन्दजी बावजी को पढ़कर सुनाई जाती है। कभी-कभी 100-100, 150-150 पत्रिकाएँ तक एक साथ आ जाती हैं।

रणतभंवर (रणथंभोर) के इन गजानन्दजी की अजीब महिमा है। इनमें लोगों की अजीब आस्था है। मैंने उससे पूछा इनमें क्या चमत्कार है? कोई ऐसी घटना हो तो सुनाओ। उसने एक नहीं कई घटनाओं का पुराण बांच दिया। कहने लगा इन्हें बिना याद किये यदि कोई कार्य प्रारम्भ कर दिया जाता है तो उसमें विघ्न पर विघ्न ऐसे खड़े हो जाते हैं कि उनसे छुटकारा पाना मुश्किल हो जाता है। एकबार एक सज्जन ने बड़े ठाटबाट से अपने लड़के का विवाह रचाया। उसने पांच पकवान बनाये और आसपास के चोखलों को जीमने बुलाया। जीमने के समय रद घर में जाकर उसने देखा कि सारा का सारा मिष्ठान्न मिट्टी गोबर बन गया है। एक दूसरी जगह जो मिष्ठान्न 500 आदमियों के जीमने के लिए बनाया था। वह सौ व्यक्तियों में ही पूरा हो गया।

इस प्रकार की और भी ऐसी कई घटनाएँ सुनने को मिलीं। अत: विवाह में सर्वप्रथम गणेशजी का गीत गाकर उन्हें पाटे बिठाते हैं। उनकी पूरी सालसम्हाल की जाती है और मानता रखी जाती है। कारण कि विवाह निर्विघ्न समाप्त करने वाले तथा ऋद्धि-सिद्धि बढ़ाने वाले ये ही गजानन्दजी होते हैं। इनके अतिरिक्त गोगुन्दा तथा गागनोर के गजानन्दजी की भी बड़ी महिमा रही है। यहां रणत के गजानन्दजी विषयक नमूने के तौर पर एक गीत दिया जा रहा है -

एक रणतभंवर ती आवो वन्याएके करे ओ अणचींती वरदड़ी।
एके ओरां री वरद जणजावो वन्याएक
एके फलाणालालजी री वरद उतावरी।
एके ओ रे वन्याएके लोको नी जीमे घीरा गडुल्या री अड़ करे।
एके ओ रे वन्याएके कोरो नी चावे काथा चूना री अड़ करे।
एके ओ रे वन्याएके पिलंगे पोड़े ढोल्या सारक री अड़ करे।
एके ओ रे वन्याएके कोरो नी जीमे लापचड़ी री अड़ करे।
एके पाटोले पग दो ओ वन्याएके बाजोट्या री अड़ करे।
एके ओ रे वन्याएके पारा नु चाले घोड़लड़ा री अड़ करे।
एके खाजा री खड़के वदावो वन्याएके लाडूओ वदजो मोकलो।
एके चोका चांवरिया वदावो वन्याएके मूंग वदजो मोकला।
एके गोर ती भेली वदावो वन्याएके खांड वदजो मोकली।
एके घीए गडुल्यो वदावो वन्याएके तेल वदजो सीदड़ा।
एके बड़ी ए वदजो टोपला ओ टोपला पापड़ वदजो मोकला।
एके रवो वदजो कोतरा ओ कोतरा आटो वदजो मोकलो।
अदन वदन दोई चड़ी ओ बोली लाल मोती वी चगे।
एके वदजो ओ लाड़ी गोत तमारी एके पीयर दूजो सासरो।
एके वदजो ओ लाड़ी चीर तमारो राई ओ वर रो सेवरो।

श्रीमहावीरजी : 12 मई 1969

यहाँ के हेला ख्यालों के दंगल प्रसिद्ध हैं। मुख्यतया ये दंगल प्रतिवर्ष चैत्र सुदी चतुर्दशी को जुड़ते हैं। इनमें एक-एक दल में सौ-

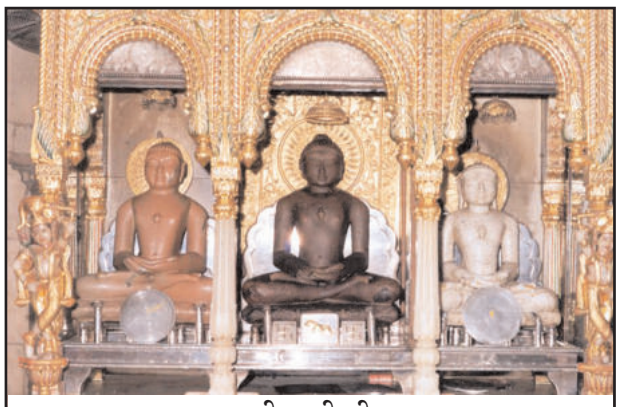

श्रीमहावीरजी

सौ, डेढ़-डेढ़ सौ तक व्यक्ति होते हैं। नगाड़ा इनका मुख्य वाद्य होता है। यह नगाड़ा इतना बड़ा होता है कि उसे गाड़ी में रख कर चलाया जाता है। इसे 'बम' तथा 'नौपत' भी कहते हैं। यों बसंत पंचमी से ही नगाड़े का पूजन प्रारम्भ हो जाता है। इसे बजाने वाले अलग होते हैं और उसके चारोंओर टीप देने वाले अलग। टीप देने वाले अपनी मादक मस्ती में विविध भावभंगिमाओं में चकरियां लेते रहते हैं और टीप देते रहते हैं। दंगली ख्याल प्रारम्भ करते हैं तो पीछे से ये लोग हेला दोहराते हैं। इनमें मुख्यतया महाभारत तथा रामायण के विविध प्रसंग चलते हैं। यहाँ रामसहाई का दंगल बहुत प्रसिद्ध है। इसके अतिरिक्त छोटी उदई, सोप, गंगापुर, पीलोदा, पेंडाल, मांचा, खंडीप, बजीरपुर, सनेट, बयाना, हिंडोल, बेर, मण्डावरी, बामनवास आदि गांवों के दंगल भी बड़े प्रसिद्ध कहे जाते हैं। हेला ख्याल का एक उदाहरण-

हेजी- हिलमिल थारी लेय कुमारी
अजी ये यमुना न्हावे चली सुकुमारी।
एजी ग्वाल बाल लिये संग पीछे से चल दियो नटवर गिरधारी।
अजी हे, हो- खड़ी यमुना तट पर ब्रज नार,
हुई जब न्हावे को तैयार,
सबन ने बस्तर दिये उतार,
नगन जल में घुस गई सारी।
श्याम ने झट पीछे से आय,
सबन के लिए चीर चुराय,
ग्वाल नीचे से रहे सोंपाय,
कदम पर चढ़ गयो वनवारी।
एजी- लटका दिये सब चीर कदंब पर देर कुछ भी लगी नहीं।
बैठ डार के ऊपर झट बंशी धीरे से बजा दई,
बंशी आवाज सुनी सब गोपी इत उत देख रह।
कह रहीं यो तो कहीं से आ गयो कृष्ण मुरारी।
एजी निगा कदंब पर पड़ी सबन की चीर लटक रहे डाली
डाली सखी ऊं बैठ्यो बनवारी।
हुई ये बड़े गजब की बात,
चीर अब कैसे आवें हाथ,
इधर हो तो आवे पर भात, दिन में शरम लगे भारी॥
दोहा - ब्रजवाला जल में खड़ी, विनय रही कर जोर।
हम हैं दासी आपकी, नटवर नंदकिशोर।।
हम तो खड़ी हैं उघारी तुम देदो चीर हमारे बनवारी।
चलत-अजी ये हो रही हैं ब्रजबाला अर्ज सुनाय,
जल्द से देओ चीर गहाय, सांवरे क्यों रहे देर लगाय,
मरी जायें जाड़े को मारी।
अजी ये हो-बात मैं एक न मानूंगो कहोगी जैसे ही मैं की दंगो,
तुम्हारे चीर जब ही दंगो, बाहर आजाओ तुम सारी।
देखे जाकी उमर घट जावे। फेंक और जल्दी चीर श्याम बनवारी।
दौड़ - जो कृष्ण कहें सुनले ओ ब्रजवाला गलकी
तुमने कर डारी, नंगी न्हाई यमुनाजी में या
याको दोष एजी लगे भारी, वरुण देव को
वासौ जल में तुमने जुलम करी भारी,
ए हाथ जोड़ कर क्षमा मांगलो सारी।
चलत - अजी ये हो-कोई ने लीनी कजी लपेट,
कोई हाथन से दुबा रही पेट, कोई तो पत्ता रही समेट,
निकसवे को कर रही तैयारी।
ए जी एक-एक करके चीर सबन को दे रहे काना बनवारी।
वे तो पहरन लगी बिचारी कृष्ण इनको समझाते जायँ।
सबन को चीर रहे सोंपाय।
गोपिका राजी होती जायें, भवन को चल दिये बनवारी।

करौली : 13 मई 1969

रामलीला :

लगभग चालीस वर्ष पुराना यहां रामलीला का संगठन है। मथुरा शैली पर आधारित यह रामलीला अपनी विशिष्टता के लिए प्रसिद्ध है। पूरे लीला-प्रदर्शन में महीना भर लगता है। लीला के विशिष्ट प्रसंगों के स्थल अलग-अलग बड़े भव्य रूप में बनाये जाते हैं। धनुषयज्ञ लंकादहन आदि के दृश्य इस लीला के विशेष चर्चित कहे जाते हैं। रामविवाह की सवारी में जो जुलूस निकलता है वह देखते ही बनता है। इसमें विवाह में जाने के पूर्व राम की बनोली का दृश्य रहता है। रावणवध पर रावण का आदमकद पुतला जलाया जाता है। यहां के पं. नथुवाराम डोडीवान, पं. सच्चिदानन्द तथा रामचरनलाल इस लीला के प्रमुख कर्मी हैं। गंगाप्रसादजी वैद्य की देखरेख में मडराल में भी रामलीला का लघु संगठन है जो आसपास के क्षेत्रों को अपनी लीला झांकियों से मनोरंजित करता है।

स्वांग :

इधर चमार तथा डोम लोगों की शौकिया स्वांग पार्टियां भी अच्छे प्रदर्शन देती हैं। ये स्वांग नौटंकी की शैली पर आधारित होते हैं। शादियों में इन स्वांगों की बहार रहती है। राजोर, भांकरी, सपोटरा, मासलपुर, नारोली आदि गांवों की मण्डलियां इधर अपने प्रदर्शनों के लिए बेजोड़ समझी जाती हैं । - **क्रमश :**

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।